सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 26 मई, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 258 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुकून

भीषण गर्मी के बीच सूरज को यूं ओट में ले लेने वाला बादल राहत देता है। राहत कि मानसून बस आने वाला है।

फोटो- गिरीश शर्मा

subahsaverenews@gmailÐcom
facebookÐcom/subahsaverenews
wwwÐsubahsavereÐnews
twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

मैं इस समय से ऊब गया हूँ।

यह समय जो बीतता ही नहीं है,
जो छलछलाने के सिवाय
कोई मनोवेग नहीं जानता,
जो उल्टे पैरों लौट नहीं सकता
जिसे मैं तोड़ नहीं पाता
जिसे मैं छोड़ नहीं पाता
और न छुपा पाता हूँ।
यह उड़ भी तो नहीं सकता
मेरे विचारों संग।
एक ही नाप में चलता है
यह समय नियत, उदास, तटस्थ।
कठिन है कृत्रिम मेघा संग दौड़ते,
इस मंथर समय के साथ जीना।
मुझे नया समय चाहिए।

- धर्मपाल महेंद्र जैन

खरीफ के लिए सभी स्थानों पर पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध हो : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

फसल उपार्जन में अच्छी गुणवत्ता की पैदावार लाने वाले किसानों को सम्मानित व पुरस्कृत किया जाए

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि खरीफ के लिए सभी स्थानों पर पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध हो। यह सुनिश्चित किया जाए कि कहीं भी कालाबाजारी की संभावना निर्मित न हो। प्रदेश में पर्याप्त उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार से निरंतर सम्पर्क किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कृषकों को संतुलित उर्वरक एनपीके के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रालय में कृषि आदान की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में मुख्य सचिव श्रीमती वीरा राणा, कृषि उत्पादन आयुक्त श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव सहकारिता श्रीमती दीपाली रस्तोगी तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में यूरिया, डीएपी, एनपीक., एसएसपी और एमओपी उर्वरक की माँग, अब तक प्राप्त मात्रा तथा वितरण व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की। बैठक में धान, कोदो, कुटकी, मक्का, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंगफली, सोयाबीन, कपास आदि के बीज की उपलब्धता की भी जानकारी दी गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि फसल उपार्जन में अच्छी गुणवत्ता की पैदावार लाने वाले किसानों को सम्मानित व पुरस्कृत करने की प्रक्रिया भी आरंभ की जाए।

भूमि की उर्वरकता बनाए रखने के लिए प्राकृतिक खाद के उपयोग को प्रोत्साहित करना जरूरी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में प्राकृतिक खाद के उपयोग को बढ़ाने के लिए किसानों को प्रेरित किया जाए। बॉयो फर्टिलाइजर का उपयोग करने वाले किसानों की मदद के लिए व्यवस्था विकसित की जाए, जिससे कृषक ऑर्गेनिक उत्पाद लेने के लिए आगे आएं। पशुपालन-कम्पोस्टिंग को समन्वित करते हुए श्रीअन्न की उपज लेने के लिए भी किसानों को प्रेरित करने की आवश्यकता है। इससे फसल चक्र को संतुलित बनाए रखने में मदद मिलेगी और भूमि की उर्वरकता भी लंबे समय तक बनी रहेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौ-वंश की सुरक्षा और उनकी उचित देखभाल के लिए गौ-सेवा संगठनों, सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं के साथ ग्राम स्तर पर पहल की जाए।

सीधी में छात्राओं से रेप मामले में एसआईटी गठित

- **सीएम बोले-किसी दोषी को बख्शेंगे नहीं, नेता प्रतिपक्ष ने की उच्चस्तरीय जांच की मांग**

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के सीधी जिले में आदिवासी छात्राओं से रेप मामले की जांच के लिए स्पेशल इंन्वेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) का गठन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच और कार्यवाही के निर्देश दिए हैं। इसके बाद आईजी रीवा ने इस मामले में एसडीओपी कुसमी के सुपरविजन में 9 सदस्यीय टीम का गठन किया है जो प्रकरण के सभी पहलुओं की बारीकी से जांच कर हर केस की कार्यवाही से 7-7 दिनों में अवगत कराएगी।

किसी दोषी को बख्शेंगे नहीं

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर किए ट्वीट में कहा है कि सीधी जिले के मझौली थाना में आदिवासी छात्राओं से स्कॉलरशिप देने का लालच देकर गलत कार्य करने का मामला मेरे संज्ञान में आया है। आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया गया है। ऐसा निंदनीय कार्य करने वाले समाज के दुश्मन हैं, आरोपी के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। इस मामले के सभी पहलुओं की बारीकी से जांच करने और ठोस साक्ष्य संकलित करने के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया गया है। जो संपूर्ण तथ्यों की निष्पक्ष जांच कर रिपोर्ट सौंपेगा।

9 सदस्यीय टीम में ये शामिल

- रोशनी सिंह ठाकुर, एसडीओपी कुसमी सुपरविजन ऑफिसर
- सब इंस्पेक्टर दीपक सिंह बघेल, थाना प्रभारी मझौली (विवेचक)
- सब इंस्पेक्टर प्रीति वर्मा (विवेचक)
- सब इंस्पेक्टर केदार परौहा (विवेचक)
- सब इंस्पेक्टर दिव्य प्रकाश त्रिपाठी (साइबर सेल)
- प्रधान आरक्षक महेंद्र पाटले
- आरक्षक विवेक द्विवेदी
- महिला आरक्षक प्रतीक्षा तिवारी
- आरक्षक प्रदीप मिश्रा (साइबर सेल)

आईजी ने बनाई है एसआईटी

आईजी रीवा महेंद्र सिंह सिकरवार द्वारा एसआईटी गठन को लेकर जारी आदेश में कहा है कि सीधी जिले के मझौली थाना क्षेत्र में चार अलग-अलग प्रकरण दर्ज हैं जो अपराध क्रमांक 442, 450, 456 और 471 में रेप, छेड़छाड़, पाक्सो एक्ट और अन्य धाराओं में पंजीबद्ध हैं। इन प्रकरणों की गंभीरता को देखते हुए तय समय में विवेचना करने के लिए रोशनी सिंह ठाकुर एसडीओपी कुसमी जिला सीधी के नेतृत्व में अधिकारियों और कर्मचारियों की टीम विशेष जांच दल (एसआईटी) के रूप में गठित की गई है।

छठवां चरण

बंगाल में बंपर वोटिंग, यूपी-बिहार में सुस्त रही रफ्तार

- 8 राज्यों की 58 सीटों पर वोटिंग संपन्न, आखिरी चरण 1 जून को
- धोनी ने रांची में वोट डाला, प्रियंका बच्चों के साथ वोट डालने पहुंची

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के छठे फेज में 7 राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश की 58 सीटों पर वोटिंग संपन्न हो गई है। पांच फेज में 429 सीटों पर मतदान हो चुका है। 1 जून को आखिरी 56 सीटों पर वोटिंग होगी। चुनाव आयोग के मुताबिक, शनिवार को 58 सीटों पर शाम तक 60 फीसदी से ऊपर वोटिंग हुई है। सबसे ज्यादा पश्चिम बंगाल में 79 फीसदी और सबसे कम यूपी में लगभग 60 फीसदी मतदान हुआ है। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया पर शनिवार को एक पोस्ट किया है। उन्होंने बांकुड़ा जिले रघुनाथपुर में 5 ईवीएम पर भाजपा का टैग लगे होने का आरोप लगाया है। चुनाव आयोग ने इस पर कहा- वोटिंग शुरू होने से पहले कैंडीडेट के एजेंट साइन करते हैं। इन सेंटर्स पर टीएमसी के एजेंट मौजूद नहीं थे, इसलिए सिर्फ बीजेपी एजेंट्स के साइन हैं। पश्चिम बंगाल के तमलुक में वोटिंग से पहले भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ झड़प में एक टीएमसी समर्थक घायल हो गया। यहां से कलकत्ता हाईकोर्ट के पूर्व जज भाजपा के प्रत्याशी हैं। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग-राजौरी से प्रत्याशी महबूबा मुफ्ती धरने पर बैठ गईं। उन्होंने ईवीएम के साथ छेड़छाड़ और मोबाइल फोन का आउटगोइंग कॉल बंद करने का आरोप लगाया है।

सुरक्षाकर्मियों के बीच वोटिंग बूथ पहुंचीं नूपुर शर्मा

सोचिए, बीजेपी की नेता रहीं नूपुर शर्मा का दिखना भी खबर है। आज नूपुर शर्मा दिखीं। लोकसभा चुनाव के छठे चरण में आज दिल्ली में भी मतदान हो रहा है लोकतंत्र के इस पर्व में शामिल होने का दायित्व निभाने नूपुर शर्मा भी घर से निकलीं और मतदान केंद्र तक पहुंचीं। इस दौरान उनके इर्द-गिर्द सुरक्षा का कड़ा घेरा था। हाथों में घातक हथियार लिए सुरक्षा कर्मी उन्हें चारों ओर से घेरकर चल रहे थे। पांच विशेष सुरक्षाकर्मियों के अलावा एक पुलिस वाला भी साथ दिखा। सुरक्षाकर्मियों में एक महिला भी थी। इन सबके बीच घिरीं नुपूर शर्मा को जब कैमरे ने कैच किया तो वो मुस्कुरा उठीं। वो कैमरे के सामने रुककर तस्वीरें तो नहीं खिंचवाईं, लेकिन चलते-चलते ही वोट वाली अपनी उंगली जरूर दिखाई। नूपुर शर्मा बहुत लंबे वक्त तक गुमशुदा सी रहीं। फिर एक कार्यक्रम में उन्हें देखा गया। इस बीच नूपुर शर्मा का समर्थन करने वाले राजस्थान के कन्हैयालाल के साथ-साथ देश के कई अन्य इलाकों में अलग-अलग लोगों ही नृशंस हत्या कट्टरपंथी मुसलमानों ने की। हैरत की बात यह है कि सुप्रीम कोर्ट ने इन हत्याओं के लिए भी नूपुर शर्मा को ही जिम्मेदार ठहरा दिया तो सोशल मीडिया पर काफी आक्रोश देखा गया। वह दौर था जब पूरे देश में कट्टरपंथी मुसलमानों का खौफ बरपा था। जो कोई भी नूपुर शर्मा की बात करता, उसे सनकी मुसलमानों की तरफ से सर तन से जुदा की धमकियां मिलने लगतीं। आज माहौल कुछ अलग है।

अपनी सरकार पाने के हकदार जम्मू-कश्मीर के लोग, जल्द कराएंगे चुनाव: ईसी

मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) राजीव कुमार ने शनिवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर में लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत से उत्साहित निर्वाचन आयोग ''बहुत जल्द'' केंद्र शासित प्रदेश में विधानसभा चुनाव कराने की प्रक्रिया शुरू करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोग अपनी सरकार पाने के हकदार हैं। जम्मू-कश्मीर की विभिन्न सीट पर मतदान प्रतिशत और विधानसभा चुनाव के बारे में पूछे गये सवाल का जवाब देते हुए कुमार ने कहा कि संसदीय चुनावों में लोगों की भागीदारी से निर्वाचन आयोग बहुत उत्साहित है। उन्होंने कहा, ''लोग - युवा, महिलाएं खुशी-खुशी बड़ी संख्या में (मतदान के लिए) निकल रहे हैं। लोकतंत्र की जड़ें और मजबूत हो रही हैं, लोग भाग ले रहे हैं।'' मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा, ''वे अपनी सरकार पाने के हकदार हैं। हम बहुत जल्द ही वह प्रक्रिया शुरू करेंगे... ऐसा करने के लिए बहुत उत्साहित हूं।''

भोपाल का तापमान
अधिकतम 42.9 °c
न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 26 मई 2024

> जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
>
> चाणक्य नीति

नौतपा में और हाई हुआ गर्मी का 'पारा', 13 की मौत

मौसम | **6 राज्यों में लू का रेड अलर्ट जारी,भोपाल में नहीं उड़ सकी फ्लाइट**

नई दिल्ली (एजेंसी)। 25 मई से नौतपा शुरू हो गया है। यह 2 जून तक रहेगा। इस दौरान देश के कुछ हिस्सों में तापमान 49 डिग्री सेल्सियस तक जा सकता है। मौसम विभाग ने शनिवार को दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, पंजाब और हरियाणा के लिए लू (हीटवेव) का रेड अलर्ट जारी किया है। ज्योतिष के हिसाब से सूर्य कृतिका से रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करता है तब से नौ दिन तक नौ तपा होता है। उत्तर भारत में शुक्रवार को औसत अधिकतम तापमान 49 और न्यूनतम 31 डिग्री सेल्सियस रहा। राजस्थान में गर्मी से 5 मौतें हुईं। राज्य में 2 दिन में यह आंकड़ा 13 हो गया है। भोपाल-हैदराबाद इंडिगो की फ्लाइट शुक्रवार को एक

घंटे देरी से रवाना हुई। बताया गया कि बाहर का तापमान ज्यादा होने के चलते इंजन रिस्ट्रिक्टेड मोड में चला गया था। उधर, कश्मीर घाटी में भी तापमान बढ़ा है। यहां 23 मई को अधिकतम तापमान 32.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यह 11 साल में सबसे ज्यादा रहा। 25 मई 2013 को 32.2 डिग्री सेल्सियस था। जम्मू-कश्मीर समेत उत्तर भारत के ज्यादातर राज्यों में लू से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की गई है। राजस्थान में सफाई कर्मचारियों से सुबह 5 से 10 बजे तक ही काम करने को कहा गया है। मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली में डॉक्टरों ने मरीजों और बुजुर्गों से दिन में यात्रा नहीं करने की सलाह दी है।

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों ने फिर नक्सलियों को घेरा

1 नक्सली ढेर, कई माओवादियों को गोली लगने की खबर

सुकमा (एजेंसी)। सुकमा जिले में कोंटा के किद्रेलपाड़ इलाके में सीआरपीएफ जवानों के नक्सली को मार गिराया है। मारे गए नक्सली की पहचान नहीं हो पाई है। मुठभेड़ अब भी चल रही है। दोनों तरफ से रुक-रुककर गोलीबारी हो रही है। जानकारी के मुताबिक एनकाउंटर में कई नक्सली को गोली लगी है। एसपी किरण चव्हाण ने मुठभेड़ की पुष्टि की है। दरअसल, नक्सलियों ने कल (26 मई) को बंद का आह्वान किया है। इससे पहले ही सुरक्षाबलों ने माओवादियों के खिलाफ ऑपरेशन तेज कर दिया है। सीआरपीएफ की टीम सर्चिंग के लिए जंगलों में निकली हुई थी। इसी दौरान नक्सलियों ने फायरिंग शुरू कर दी। जवानों ने भी गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब देते हुए नक्सलियों को बैकफुट पर ला दिया। इसके बाद रुक-रुककर जंगल में अलग-अलग जगह से फायरिंग करते रहे। छत्तीसगढ़ में गुरुवार (23 मई) को अबूझमाड़ के रेकावाया इलाके में फोर्स ने 8 नक्सलियों को मार गिराया था। सूचना मिली थी कि नक्सलियों की प्लाटून नंबर 16 और इंद्रावती एरिया कमेटी के नक्सली मौजूद हैं।

एप से आवाज बदलकर बुलाया, 7 आदिवासी छात्राओं से रेप

हाथों पर जलने के निशान से पकड़ाया आरोपी; लेडी टीचर के नाम से करते थे फोन

सीधी/भोपाल (नप्र)। सीधी जिले के मझौली थाना क्षेत्र में आवाज बदलने वाले मैजिक वॉइस एप के जरिये तीन आरोपियों ने 7 से अधिक कॉलेज छात्राओं को झांसा देकर उनके साथ दुष्कर्म किया। आरोपी एप से कॉलेज टीचर बनकर महिला की आवाज में बात करते और स्कॉलरशिप के लिए दस्तावेज मंगवाने के नाम पर सुनसान जगह बुलाते थे। शक न हो, इसके लिए उन्हें पहले ही बता देते कि उन्हें तय स्थान पर लेने के लिए एक लड़का बाइक से आएगा जो उन्हें टीचर के पास पहुंचा देगा। मामले की सभी पीड़िताएं एसटी वर्ग की हैं। आरोपी उन कॉलेज छात्राओं को निशाना बनाते थे, जहां स्कॉलरशिप मिलती है। सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि ऐसा निंदनीय कार्य करने वाले समाज के दुश्मन हैं। आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस मामले की जांच के लिए 9 सदस्यीय एसआईटी टीम का भी गठन किया गया है। वहीं कांग्रेस ने इस मामले में सरकार को घेरा है।

एक पीड़ित की शिकायत पर जांच हुई तो हुआ खुलासा- एक पीड़िता ने पुलिस से शिकायत की तो जांच में खुलासा हुआ। लोकेशन ट्रेस कर पुलिस ने मुख्य आरोपी को पकड़ा। पूछताछ में दो और लोगों के शामिल होने की जानकारी मिली। पुलिस अफसरों के मुताबिक अभी तक आरोपियों ने 7 छात्राओं से दुष्कर्म की बात कबूली है। 4 छात्राओं ने एफआईआर दर्ज कराई है। पुलिस के मुताबिक पीड़िताओं की संख्या और भी अधिक हो सकती है। आरोपियों से पूछताछ जारी है।

यू-ट्यूब पर देखकर आवाज बदलने वाले एप की ली जानकारी

पुलिस ने मुख्य आरोपी ब्रजेश प्रजापति (30) और उसके साथी राहुल प्रजापति और संदीप प्रजापति को पकड़ा है। ब्रजेश प्रजापति ने दो शादियां की हैं। पहली पत्नी को उसने छोड़ दिया। दूसरी पत्नी से एक बच्ची है। आरोपी पेशे से मजदूर है, पर उसने यूट्यूब पर इस तरह के आवाज बदलने वाले एप की जानकारी ली और इसे अपने मोबाइल पर इंस्टॉल किया। इसके बाद से छात्राओं को निशाना बनाना शुरू किया।

हाथों में जलने के निशान से पुलिस ने आरोपी को पकड़ा- दुष्कर्म की शिकायत करने वाली चार छात्राओं में से एक ने पुलिस को बताया कि दुष्कर्म करने वाले अपने चेहरे को कपड़े से ढके रहते थे। लेकिन जो पहली बार दुष्कर्म करता उसके दोनों हाथों में जलने के निशान है। पीड़ित ने पुलिस को जो बताया उसके अनुसार, फिर लोकेशन और अन्य साक्ष्यों की मदद से पुलिस ने मुख्य आरोपी और उसके साथियों को गिरफ्तार किया।

संक्षिप्त समाचार

10 रुपए के 2 भारतीय नोट अब 2 लाख में होंगे नीलाम

- 106 साल पहले जर्मनी के हमले में डूबे जहाज पर मिले

लंदन (एजेंसी)। लंदन में 106 साल पहले डूबे जहाज से मिले 10 रुपए के दो भारतीय नोट की नीलामी की जाएगी। इनके 2 लाख 60 हजार रुपए तक में बिकने की संभावना जताई गई है। नीलामी 29 मई को होगी। दरअसल, 1918 में लंदन से मुंबई जाते समय एसएस शिराला नाम का एक जहाज डूब गया था। इस जहाज पर जर्मनी की एक यू-बोट (सबमरीन) ने टॉरपीडो से हमला किया था। तब इस पर 213 लोग सवार थे, जिसमें से 8 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में से 7 भारतीय थे। एसएस शिराला जहाज से मिले नोट पर 25 मई 1918

की डेट लिखी हुई है, जिसे लंदन में नूनन्स मेफेयर नीलामी घर में ब्रिकी के लिए रखा जाएगा। इन नोट्स को उस वक्त बैंक ऑफ इंग्लैंड ने छापा था। इस जहाज पर 5 हजार टन का सामान लदा हुआ था। इसमें भारतीय करेंसी के ओरिजिनल पेपर भी मौजूद थे। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, जहाज डूबने के बाद नोट बहकर ब्रिटेन के समुद्री तट पर जा पहुंचे। इनमें 1, 5 और 10 रुपए के नोट शामिल थे। उस समय वहां मौजूद अधिकारियों ने नोट को अपने कब्जे में ले लिया और कुछ को छोड़कर बाकी फाड़ दिए थे। फाड़े गए नोट की जगह पर नए नोट छापे गए थे। इन नोट पर तब ध्यान गया जब कुछ दिन पहले बैंक ऑफ इंग्लैंड ने 1918 में डूबे जहाज की घटना को एक पोस्ट के जरिए साझा किया।

कांस में पहली बार भारतीय को बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड

- अनसुइया सेनगुप्ता को फिल्म द शेमलेस के लिए मिला सम्मान

कांस (एजेंसी)। 77वें कांस फिल्म फेस्टीवल में कोलकाता की रहने वाली एक्ट्रेस अनसुइया सेनगुप्ता ने बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड अपने नाम किया है। अनसुइया को यह अवॉर्ड अन सर्टेन रिगार्ड सेगमेंट में फिल्म 'द शेमलेस' में उनके परफॉर्मेंस के लिए मिला है। इसके साथ ही वे कांस के इतिहास की पहली भारतीय एक्ट्रेस बन गई हैं जिन्हें इस अवॉर्ड से नवाजा गया है। अनसुइया ने यह अवॉर्ड दुनियाभर में समलैंगिक समुदाय और हाशिए पर रहने वाले

अन्य समुदायों को समर्पित किया है। एक्ट्रेस ने स्टेज पर कहा कि ये सभी समुदाय बहादुरी से एक ऐसी लड़ाई लड़ रहे हैं जो उन्हें नहीं लड़नी चाहिए। उन्हें समाज में बराबरी का हक पाने के लिए लड़ना पड़ रहा है।' 'द शेमलेस' का निर्देशन बुल्गारियन फिल्ममेकर कॉन्स्टेंटिन बोजानोव ने किया है। इसकी कहानी दो सेक्स वर्कर्स के इर्द-गिर्द बुनी गई है, जिनमें से एक के हाथों एक पुलिस वाले का खून हो जाता है। इस फिल्म में अनसुइया के अलावा एक्ट्रेस ओमारा शेट्टी भी अहम रोल में नजर आ रही हैं।

राजकोट के गेमिंग जोन में भीषण आग,22 की मौत

टीआरपी मॉल में हुआ अग्निकांड, मुख्यमंत्री ने घटना पर लिया संज्ञान

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के राजकोट में आगजनी की बड़ी घटना सामने आई है। भीषण गर्मी के बीच राजकोट के टीआरपी मॉल में आग लग गई है। इसमें 22

की मौत हो गई है। मरने वालों में महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। अग्निकांड में झुलसे लोगों को राजकोट सिविल अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया है। आग इतनी विकराल थी कि एक किलोमीटर दूर तक इसका धुआं देखा गया। जानकारी के अनुसार आग मॉल के गेम जोन में लगी। सूचना पर पहुंची दमकल ने पहुंचकर आग पर काबू पाया। अभी तक यह साफ नहीं हो पाया है कि मॉल में आग कहां से लगी। पुलिस के अनुसार सयाजी होटल के पास स्थित टीआरपी मॉल में अचानक आग लगने की घटना सामने आई थी। सूचना में तमाम एजेंसियां तत्काल मौके पर पहुंची थीं। मॉल में जब आग लगी उस वक्त पर गेम जोन में काफी बच्चे मौजूद थे। राजकोट में आग की इस घटना ने सूरत के तक्षशिला अग्निकांड की काली यादों को ताजा कर दिया है। इसमें 22 स्टूडेंट्स की मौत हो गई थी। गर्मियों की छुट्टियां होने के कारण काफी संख्या में लोग अपने बच्चों के साथ गेमिंग जोन में गए हुए थे। आग लगने पर अफरातफरी मच गई।

चीन को हुआ भारी नुकसान, भारत के साथ आया गूगल

- ड्रैगन के खिलाफ लिया बड़ा फैसला,अब भारत में होगा प्रोडक्शन

चेन्नई (एजेंसी)। गूगल पिक्सल 8ए कुछ समय पहले ही भारत में आया है लेकिन इसके बाद कंपनी ने भारत के पक्ष में बड़ा फैसला लिया है। अब गूगल पिक्सल का प्रोडक्शन भारत में होगा। इसको लेकर गूगल ने फाक्सकानन के साथ पार्टनरशिप भी की है। फाक्सकानन की तमिलनाडु यूनिट में गूगल पिक्सल का प्रोडक्शन किया जाएगा। ऐसे में कहा जा सकता है कि भारत के पक्ष में ये बड़ा फैसला लिया गया है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने इस मौके पर कहा, गूगल की तरफ से फाक्सकानन के साथ पार्टनरशिप की गई है। अब राज्य में गूगल पिक्सल सेल फोन का प्रोडक्शन होगा। इसके लिए फैक्ट्री सेटअप का भी ऑप्शन दिया गया है। रिपोर्ट्स की मानें तो गूगल अपने स्मार्टफोन यहीं से आयात भी करेगा।

पीएम मोदी बोले-वंचितों का जो अधिकार है, मोदी उसका चौकीदार

गाजीपुर में कहा-कांग्रेस को काम लटकाने और हक मारने में काबिलियत हासिल

गाजीपुर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को गाजीपुर में कहा- काम लटकाने और हक मारने में कांग्रेस को काबिलियत हासिल है। वीर जवानों को वन रैंक वन पेंशन तक नहीं मिलने दी। यह तब लागू हुई जब मोदी आया। इन लोगों ने जवानों की तपस्या का माखौल उड़ाया। 2013 में बीजेपी ने मुझे पीएम पद के रूप में घोषित किया। हरियाणा की रैली में मैंने वादा किया था। पीएम ने कहा- मुझे कितना संतोष होता है कि हमारी सरकार हर गरीब को मुफ्त राशन दे रही है। कोरोना के संकट में भी सरकार ने गरीब का चूल्हा बुझने नहीं दिया। कांग्रेस सपा के राज में गरीबों ने दिक्कत उठाई है। आप याद करिए कांग्रेस कैसे सरकार चलाती थी। गहमरी बाबू के ताड़ीघाट का काम छह दशक तक लटका रहा, लेकिन पुल नहीं बना। पुल तब बना जब मोदी को आपने सेवा का अवसर दिया। मोदी ने अपने भाषण की शुरुआत भोजपुरी से की। कहा- रउरी काशी के पावन धरती पर आप सब गाजीपुर के लोगन के हमार प्रणाम बा। बनारस वालों के लिए तो गाजीपुर आना ऐसा ही है, जैसे बगल के मोहल्ले में आ गए। बनारस वाले अगर गाजीपुर आ जालन केहु फोन करे त कहेलन अरे इहैं बगले में हईं भैया। मोदी ने मुख्तार के नाना महावीर चक्र विजेता ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान अंसारी को भी याद किया।

वोटर टर्नआउट पर संदेह का माहौल बनाया जा रहा

- सीईसी राजीव कुमार बोले-सुप्रीम कोर्ट ने सच माना
- सीईसी ने कहा-इस खेल की सच्चाई हम सामने लाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने दिल्ली में एक पोलिंग बूथ पर वोट डाला। इस दौरान उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले पर बात की, जिसमें चुनाव आयोग के फॉर्म 17सी डेटा और बूथ-वाइज वोटर टर्नआउट पब्लिश करने को लेकर कोई भी निर्देश देने से इनकार कर दिया है। सीईसी ने कहा कि संदेह का माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है। हम एक दिन निश्चित रूप से सभी के साथ इस पर चर्चा करेंगे। राजीव बोले कि यहां क्या खेल है, संदेह क्यों पैदा किए जाते हैं। हम एक दिन यह सामने लाएंगे और सभी को दिखाएंगे कि लोगों को कैसे गुमराह किया जाता है। लोगों के मन में कैसे संदेह पैदा होता है। सुप्रीम कोर्ट ने 24 मई को ईसी की वेबसाइट पर फॉर्म 17सी डेटा अपलोड करने और बूथ-वाइज वोटर टर्नआउट डेटा पब्लिश करने की मांग वाली याचिका पर कोई भी निर्देश देने से इनकार कर दिया है।

पुणे पोर्श एक्सीडेंट केस में अब आरोपी का दादा भी गिरफ्तार

आरोप-पोते को बचाने के लिए ड्राइवर का फोन छीना,दो दिन बंगले में कैद रखा

पुणे (एजेंसी)। पुणे पुलिस की क्राइम ब्रांच ने पोर्श एक्सीडेंट केस में शनिवार (25 मई) को नाबालिग आरोपी के दादा सुरेंद्र अग्रवाल को गिरफ्तार किया है। उस पर फैमिली ड्राइवर को बंधक बनाने का आरोप है। इस मामले में नाबालिग के पिता विशाल अग्रवाल भी आरोपी है। पुलिस ने उसे 21 मई को गिरफ्तार किया था। क्राइम ब्रांच के अधिकारी के मुताबिक, 18-19 मई की रात हादसे के बाद आरोपी के दादा और पिता ने नाबालिग को बचाने के लिए ड्राइवर को फंसाने की प्लानिंग की थी। ड्राइवर की शिकायत पर पुलिस ने दोनों के खिलाफ आईपीसी की धारा 365 (गलत तरीके से कैद करने के इरादे से अपहरण करना) और 368 (गलत तरीके से छिपाना या कैद में रखना) के तहत मामला दर्ज किया गया है। 42 साल के ड्राइवर ने पुलिस को दिए अपने बयान में बताया कि घटना के तुरंत बाद मुझे सुरेंद्र अग्रवाल का फोन आया। वह फोन पर पहले चिल्लाए। फिर अपनी पोर्श कार में जबरन बिठाकर मुझे अपने बंगले ले गए। वहां 19-20 मई तक कैद रखा। ड्राइवर के मुताबिक, नाबालिग के पिता और दादा ने उसका मोबाइल फोन छीन लिया था। उन्होंने हादसे का इल्जाम लेने के लिए पैसे का लालच दिया और कहा कि वे उसे जल्दी ही जेल से निकाल लेंगे। दोनों ने धमकी भी दी और कहा कि इस बारे में किसी से बात की तो याद रखना। मेरी पत्नी ने मुझे छुड़ाया। पुणे पुलिस कमिश्नर अमितेश कुमार ने शनिवार (25 मई) को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि ड्राइवर ने शुरू में बताया था कि वह कार चला रहा था।

देश में डिजिटल हाउस अरेस्ट साइबर क्रइम में बढ़ोत्तरी

- बीते 10 साल में सामने आए 65 हजार मामले, 4.69 लाख करोड़ रुपए का घोटाला हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में साइबर क्राइम तेजी से बढ़ता जा रहा है। लोगों को निशाना बनाने के लिए नए-नए तरीके खोजे जा रहे हैं। धोखाधड़ी के लिए एक नया तरीका डिजिटल हाउस अरेस्ट काफी इस्तेमाल किया जा रहा है। रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट से पता चला है कि 2023 के दौरान देश में 30 हजार करोड़ रुपए से अधिक की धोखाधड़ी हुई। हाउस अरेस्ट में नकली पुलिस स्टेशन, सरकारी कार्यालय स्थापित करने और पुलिस जैसी वर्दी पहनने जैसे हथकंडे भी अपनाए जा रहे हैं। पिछले एक दशक में, भारतीय बैंकों ने धोखाधड़ी के 65,017 मामलों की सूचना दी है, जिसके कारण कुल 4.69 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। साइबर अपराधी बेखबर लोगों को धोखा देने के लिए एटीएम, क्रेडिट कार्ड, ओटीपी, जॉब और डिलीवरी स्कैम सहित कई तरह के तरीके अपनाते हैं। साइबर ठगी में अपराधी पीड़ित को गिरफ्तार करने का नाटक भी कर सकते हैं। वे नकली पुलिस स्टेशन या सरकारी कार्यालय स्थापित करने और सरकारी वर्दी पहनने जैसे तरीके भी अपनाते हैं। इसे डिजिटल गिरफ्तारी कहा जाता है। डिजिटल गिरफ्तारी का सबसे पहला मामला यूपी से आया है।

परिक्रमा

शाही खानदान से देश के राजा तक पहुंची चुनावी जंग

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

लोकसभा चुनाव के छह चरण पूरे हो चुके हैं और अब केवल एक चरण बाकी है, यह एक चरण इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी में मतदान होना है। चुनाव अभियान में एक-दूसरे पर तंज कसने और बढ़त लेने का कोई भी मौका प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और कांग्रेस नेता राहुल गांधी नहीं छोड़ रहे हैं। देशव्यापी स्तर पर एनडीए और इंडिया महागठबंधन के लिए मुख्यरुप से चुनावी प्रचार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ही कर रहे हैं, इसीलिए वे एक-दूसरे के निशाने पर हैं। बीच में राज्यों के क्षेत्रीय क्षत्रप भी किसी न किसी के निशाने पर आ जाते हैं। शाब्दिक जंग गरीब मॉं के बेटे से होती हुई वाया शाही खानदान और देश का बेटा हूं तक जा पहुंची है। अभी और कौन-कौन से शाब्दिक अलंकरण सामने आना है यह जैसे-जैसे एक जून पास आयेगा देखने व सुनने को मिलेंगे। अपने भाषण में भावनात्मक पक्ष शामिल करने में नरेन्द्र मोदी का कोई मुकाबला नहीं है, उन्होंने पंजाब के पटियाला में कहा कि यदि वे 1971 में भारत के प्रधानमंत्री होते तो करतारपुर भारत में होता और इसी शर्त पर वे जो सैनिक भारत-पाक युद्ध में बंदी बनाये थे उन्हें रिहा करते। तो वहीं दूसरी ओर राहुल गांधी ने कहा कि मैं देश का बेटा हूं। बस्ती और श्रावस्ती में चुनावी रैली को सम्बोधित करते हुए मोदी ने कहा कि मैं गरीब मॉं का बेटा हूं किसी शाही खानदान का नहीं, मुझे किसी के लिए कुछ कमाना नहीं है। उन्होंने मतदाताओं को चेताते हुए यहां तक कह डाला कि सपा और कांग्रेस वाले आपके घर से पानी टोंटी खोल कर ले जायेंगे, क्योंकि उन्हें इसी में महारत हासिल है। मोदी का इशारा समाजवादी पार्टी सुप्रीमो अखिलेश यादव की ओर था क्योंकि जब अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री निवास खाली किया था तब उन पर यह आरोप लगाया गया था कि वे जाते-जाते नल की टोंटी खोलकर ले गए हैं। मोदी ने कहा कि कल मैं एक वीडियो देख रहा था कि लोग भाग-भाग कर मंच पर चढ़ रहे हैं मैंने पूछा कि यह हुड़दंग क्यों चल रहा है तो बताया गया कि सपा और कांग्रेस वाले रैली में लोगों को लाने के लिए कांट्रेक्ट देते हैं, प्रति व्यक्ति पैसा देते हैं लेकिन उन्हें इतना पैसा दिया नही तो लोग मंच पर भाग कर चढ़ गये। मोदी का कहना था कि अब पाकिस्तान पस्त पड़ चुका है लेकिन उसके हमदर्द सपा और कांग्रेस वाले भारत को डराने में जुटे हैं, ये हमें डराते हैं, इनको मालूम नहीं कि 56 इंच क्या होता है। उनका आरोप था कि सपा और कांग्रेस के शासन में डीएम और डीजीपी बनाने तथा नौकरी देने के लिए रेट कार्ड फिक्स था, अब यह सब बंद हो गया है, जिसका इतना नुकसान होगा वह मोदी को गाली तो देगा ही, मोदी को यह गालियां मंजूर हैं, सपा कांग्रेस वाले कान खोलकर सुन लें कि मेरे लिए भ्रष्टाचार कतई मंजूर नहीं। मोदी ने कहा कि उनके प्रति जनता का उत्साह साफ-साफ बता रहा है कि सपा व कांग्रेस का इंडिया गठबंधन पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका है, पूरा देश यही कह

रहा है कि एक बार फिर मोदी सरकार। वहीं दूसरी ओर सोनीपत में राहुल गांधी ने कहा कि मैं देश का बेटा हूं और प्रधानमंत्री मोदी देश के राजा। उन्होंने मतदाताओं को भरोसा दिलाया कि इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर किसानों के कर्ज माफ होंगे और एमएसपी की गारंटी देगी। राहुल ने कहा कि एक बार हम और किसानों का कर्ज माफ तो करेंगे ही और अग्निवीर योजना को कूड़े के ढेर में डाल देंगे। पीएम कहते हैं कि किसानों का कर्ज माफ नहीं होगा लेकिन हम माफ करेंगे, पीएम सिर्फ अरबपतियों का कर्ज माफ करते हैं। भाजपा सरकार ने गरीबों को और गरीब बनाया है, मोदी सरकार अमीरों की सरकार है। चुनाव के दौरान पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस सरकार को एक बड़ा झटका कलकत्ता हाईकोर्ट से उस समय लगा जब राज्य में 2010 के बाद जारी सभी ओबीसी प्रमाणपत्र रद्द कर दिये गये। इनकी संख्या लगभग 5 लाख है। उच्च न्यायालय ने सर्टिफिकेट जारी करने की प्रक्रिया को असंवैधानिक करार दिया और 37 वर्गों को दिये गये ओबीसी आरक्षण को रद्द कर दिया। हालांकि कोर्ट ने यह कहा कि रोजगार की प्रक्रिया में रद्द किये गये प्रमाण पत्रों का उपयोग नहीं हो सकेगा, लेकिन उन लोगों पर इस सर्टिफिकेट के आधार पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा जो नौकरी कर रहे हैं। इस पर दिल्ली में एक चुनावी रैली को सम्बोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इंडी एलायंस के लिए यह बड़ा तमाचा है, प .बंगाल सरकार ने वोट बैंक के लिए मुसलमानों को ओबीसी बनाने के लिए अनाप-अनाप सर्टिफिकेट दिये। तुष्टिकरण की सनक हद पार कर रही है और यही लोग यह भी कहते हैं कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है। ये लोग लगातार सरकारी जमीनें वक्फ बोर्ड को दे रहे हैं और बदले में वोट मांग रहे हैं यह वोटबैंक राजनीति की पराकाष्ठा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अदालत के फैसले पर नाराजगी जताते हुए कहा कि हम इस आदेश का पालन नहीं करेंगे, प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि हम अल्पसंख्यक व ओबीसी का आरक्षण छीन लेंगे, क्या ऐसा कभी हो सकता है। ममता ने आरोप लगाया कि ये शरारती लोग -भाजपा- अपना काम एजेंसियों के माध्यम से कराते हैं, इसी के माध्यम से इन्होंने आदेश जारी कराया है। जिन्होंने आदेश दिया इसे अपने पास रखें हम भाजपा की राय नहीं मानेंगे और ओबीसी आरक्षण जारी रहेगा। भले ही लोकसभा चुनाव अब समापन की दिशा में आगे बढ़ रहा है लेकिन विरोधियों पर तीखे वार और पलटवार का सिलसिला बदस्तूर जारी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पंजाब में पहली चुनावी रैली में कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि 1971 के भारत-पाक युद्ध के समय मोदी पीएम होता तो करतारपुर भारत में होता। उधर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पीएम के इस बयान पर तंज कसा कि उन्हें परमात्मा ने भेजा है। मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने 70 साल पहले देश का ऐसा बंटवारा किया कि दूरबीन से करतारपुर साहब के दर्शन करना पड़ते हैं। बांग्लादेश की लड़ाई में 90 हजार से ज्यादा पाक सैनिक सरेंडर कर हमारे कब्जे में थे और उस समय मोदी होता तो करतारपुर साहब को लेकर ही सैनिकों को छोड़ता। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि पंजाब में दिखावे के लिए दिल्ली की भ्रष्टाचारी पार्टी और सिख दंगों की दोषी पार्टी आमने-सामने लड़ रहे हैं लेकिन वास्तव में दोनों एक ही हैं।

और यह भी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घेराबंदी करने में पूरी ताकत से भिड़े हुए हैं, उन्होंने दिल्ली की एक सभा और सोशल मीडिया पोस्ट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि परमात्मा ने यह कैसा आदमी भेज दिया कि लोग कोविड में दम तोड़ रहे थे और वे लोगों से थाली बजाने और मोबाइल की लाइट जलाने को कहते रहे। राहुल ने आगे कहा कि मोदी ने वाराणसी में एक इंटरव्यू में कहा था कि वह बायोलॉजिकल नहीं हैं बल्कि परमात्मा ने उन्हें सेवा मिशन के लिए भेजा है। राहुल का कहना था कि परमात्मा का भेजा हुआ व्यक्ति 22 लोगों के कहने से काम करते हैं और बेरोजगारों के लिए पकौड़ा तलने के लिए कहते हैं।

भोपाल में बदमाशों के निशाने पर पुलिस कॉलोनी

● एक दर्जन से अधिक वाहनों में तोड़फोड़ कर बदमाश फरार

भोपाल (नप्र)। भोपाल की जहांगीराबाद थाना इलाके में स्थित तीन मंजिल पुलिस लाइन और रुस्तमजी परिसर में शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात अज्ञात बदमाशों ने पुलिसकर्मियों के आधा दर्जन चार पहिया वाहनों में तोड़फोड़ कर दी। वारदात को अज्ञात बदमाशों ने अंजाम दिया है। शनिवार की सुबह स्थानीय रहवासियों ने मामले की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने शिकायत दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। एसआई लक्ष्मण शर्मा ने बताया कि तीन मंजिला पुलिस लाइन में शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात अज्ञात बदमाशों ने पार्किंग में खड़ी करीब आधा दर्जन वाहनों को निशाना बनाया। बदमाशों ने सभी वाहनों के कांच फोड़ दिए और फरार हो गए। इसी तरह से आधा दर्जन से अधिक वाहनों को रुस्तमजी परिसर में भी निशाना बनाया गया है। स्थानीय रहवासी कृष्णा घाड़गे के मुताबिक अज्ञात लोगों ने वारदात को अंजाम दिया है। रात करीब तीन बजे वाहनों में तोड़फोड़ की आवाजों के बाद रहवासी बाहर निकले थे। हालांकि इस दौरान बदमाश फरार हो चुके थे। तत्काल पुलिस को सूचना दी। सुबह पुलिस ने शिकायत दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू की।

सीसीटीवी कैमरों में आरोपियों की तलाश

पुलिस आरोपियों की पहचान के लिए सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाल रही है। फिलहाल पुलिस को आरोपियों का कोई सुराग हाथ नहीं लगा है। पुलिस का कहना है कि जल्द आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

नाबालिग ने 100 फीट गहरे कुएं में सुसाइड किया

● सारंगपुर में सीसीटीवी में कैद हुई घटना; दो घंटे की मशक्कत के बाद निकाला शव

सारंगपुर (नप्र)। राजगढ़ जिले में एक नाबालिग ने 100 फीट गहरे कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली। नाबालिग आकर चुपचाप कुएं में कूद गया। यह पूरी घटना पास के सीसीटीवी में कैद हो गई। मामला सारंगपुर का शुक्रवार शाम करीब 6 बजे का है। जानकारी लगने के बाद एसडीओपी अरविंद सिंह, थाना प्रभारी संतोष सिंह बाघेला और पुलिस टीम मौके पर पहुंची, जिन्होंने गोताखोरों को बुलाकर नाबालिग का रेस्क्यू किया। करीब दो घंटे की मशक्कत के बाद उसका शव निकाला जा सका। उसकी पहचान रितेश माली (17) के रूप में हुई है। सुसाइड का कारण अभी पता नहीं चल सका है। नितेश परिवार में इकलौता बेटा था।

100 फीट से अधिक गहरा है कुआं, अभी 35 फीट पानी है: सारंगपुर के निजामाबाद मोहल्ले में पालीवाल कॉम्प्लेक्स के पास मीठा कुआं है। इसी कुएं से करीब 100 साल से पेयजल की आपूर्ति की जाती है। नगर पालिका ने कुएं को ढक्कन बनवाकर पैक किया हुआ है। नाबालिग पानी निकालने के लिए छोड़े गए 2 बाय 3 फीट के होल से कूद गया। घटना के समय दो युवक कुएं के पास खड़े होकर बातें कर रहे थे, जिन्होंने तुरंत घटना की जानकारी पुलिस को दी। पुलिस पहुंचने से पहले ही मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई।

वीआईटी कॉलेज में 2 हजार छात्रों का हंगामा

बोले- गर्मी में पीने का पानी तक नहीं मिल रहा; कॉलेज ने परीक्षा स्थगित की

सीहोर (नप्र)। सीहोर में वीआईटी कॉलेज में शुक्रवार रात करीब 2 हजार स्टूडेंट्स ने हंगामा कर दिया। छात्रों का आरोप है कि भारी भरकम फीस होने के बावजूद कॉलेज प्रबंधन भीषण गर्मी में पीने का पानी तक उपलब्ध नहीं करा पा रहा है। हालांकि, कॉलेज प्रबंधन इस बात से इनकार कर रहा है। जानकारी के अनुसार, छात्रों को पानी की शॉर्टेज को लेकर कॉलेज की तरफ से मेल किया गया था, जिसमें गर्मी के चलते ज्यादा तला-भूना और मिर्च वाला खाना न खाने और पानी का उपयोग कम करने के लिए कहा गया था। छात्रों का कहना है कि पीने का पानी तक नहीं मिल पा रहा। मेल मिलने के बाद भोपाल-इंदौर मार्ग स्थित वीआईटी कॉलेज में रात 12 बजे छात्र कॉलेज परिसर में इकट्ठा हो गए। छात्र पीने के पानी की मांग कर रहे थे। जब उनकी बात नहीं सुनी गई तो छात्र नारेबाजी करने लगे। कॉलेज में तोड़फोड़ की। कॉलेज के प्रोफेसर की गाड़ी को भी नुकसान पहुंचाया गया है। करीब देर रात 3 बजे तक छात्रों ने हंगामा किया। हंगामे के बाद कॉलेज ने ग्रीष्मकालीन अवकाश की घोषित कर दिया है, जबकि आज से कॉलेज में परीक्षा शुरू होने वाली थी। वीआईटी कॉलेज में देश भर के स्टूडेंट्स पढ़ते हैं। यहां बड़े अफसर, उद्योगपतियों के बच्चों की संख्या भी काफी ज्यादा है। कॉलेज की फीस 7 से 10 लाख रुपए है।

परीक्षा स्थगित की, स्टूडेंट्स को घर जाने के लिए कहा: कॉलेज प्रबंधन की ओर से अमित सिंह का कहना है कि पानी की समस्या जैसी कोई बात नहीं है। छात्र इकट्ठा हुए थे, लेकिन किस बात को लेकर नाराज हैं यह पता नहीं है। हमने आज से ग्रीष्मकालीन अवकाश घोषित कर दिया है। कॉलेज के मेल को लेकर अमित सिंह ने कहा, प्रदेश में भीषण गर्मी का दौर चल रहा है। सीहोर जिला भी इसकी चपेट में है। गर्मी में छात्रों की सेहत को लेकर संतुलित आहार लेने की सलाह दी थी। वीआईटी कॉलेज प्रबंधन ने सर्कुलर जारी कर लिखा- गर्मी को देखते हुए कॉलेज ने 25 मई से सभी परीक्षाओं को स्थगित कर दिया है। स्थगित परीक्षाएं अगले सेमेस्टर में निर्धारित की जाएंगी और तारीखें अधिसूचित की जाएंगी। 2021 बैच को छोड़कर सभी छात्र ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के लिए घर जा सकते हैं। जिन छात्रों ने पहले से टिकट बुक किए हुए हैं, और टिकट कैंसिल नहीं करवा सकते वे अपनी यात्रा की तारीख तक हॉस्टल में ही रुक सकते हैं।

कॉलेज ने कहा- अगले सेमेस्टर में बचे हुए पेपर लेंगे

बीटेक सीएस कोर्स के 2021-25 बैच के एक स्टूडेंट ने मीडिया को बताया, हमारी परीक्षा 16 मई से शुरू हुई थी। 2 पेपर हो गए थे। 2 पेपर और होने थे। शुक्रवार सुबह 4 बजकर 35 मिनट पर मेल आया, जिसमें बताया गया कि गर्मी बहुत ज्यादा है, इसलिए 2021-25 बैच को छोड़कर अन्य बैचेस को छुट्?टी दे दी गई है। क्योंकि हमारा प्लेसमेंट होना है। मेल में लिखा है कि हमारे बचे हुए पेपर अगले सेमेस्टर में ले लिए जाएंगे।

कई बार शिकायत करने पर भी प्रबंधन ने ध्यान नहीं दिया

सूत्रों से पता चला है कि हॉस्टल में 8 ब्लॉक हैं। इनमें से 6 लड़कों और 2 लड़कियों के हैं। 1 नंबर ब्लॉक में सबसे ज्यादा करीब 3 हजार छात्र रहते हैं। इसी ब्लॉक में पानी की सबसे ज्यादा किल्लत है। कई दिनों से 1 नंबर ब्लॉक के छात्र बोतल, बाल्टी जैसे बर्तन लेकर दूसरे ब्लॉक से पानी ला रहे थे। छात्रों का कहना है कि उन्होंने कई बार कॉलेज प्रबंधन से व्यवस्था सुधारने की मांग की, किसी ने ध्यान नहीं दिया।

तहसीलदार से बदसलूकी करने वाले 4 आरोपियों के घर ढहाए

● नशे में ड्राइवर और दुकानदार को पीटा था; सीसीटीवी आया था सामने

उमरिया (नप्र)। उमरिया जिले में नायब तहसीलदार से बदसलूकी और उनके ड्राइवर से मारपीट करने वाले चार आरोपियों के अतिक्रमण ढहा दिए गए। शनिवार दोपहर में प्रशासन ने आरोपियों के घर पर बुलडोजर चला दिया। दरअसल, 23 मई गुरुवार को कलेक्टर घरणेन्द्र कुमार जन-मन कार्यक्रम में शामिल होने जिले के लोरहा गांव गए थे। यहां शराब दुकान के पास हाईवे पर खड़े होकर नायब तहसीलदार कौशल सिंह और उनका ड्राइवर उमेश राय कलेक्टर का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान चार बदमाशों ने शराब को लेकर दुकानदार से मारपीट की। इसके बाद नायब तहसीलदार और ड्राइवर से गाली गलौज करने लगे। ड्राइवर ने विरोध किया तो एक बदमाश ने पत्थर उठाकर मार दिया। इसके बाद जंगल की ओर भाग गए। घायल ड्राइवर को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया था। शुक्रवार को दुकानदार के साथ मारपीट का सीसीटीवी फुटेज सामने आया। जिसके बाद पुलिस आरोपियों की तलाश में जुट गई। सभी को पकड़ लिया गया।

एसपी निवेदिता नायडू ने बताया कि नाबालिग समेत चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जांच की जा रही है। नायब तहसीलदार कौशल सिंह ने बताया, आरोपियों के मकानों को चिह्नित कर गिराने कार्रवाई की गई है। आरोपियों में करिया उर्फ मनीष लोनी (22), मोहित लोनी (21), शिवम लोनी (22) और एक नाबालिग शामिल है।

लूट के विरोध में अलीराजपुर बंद,

बदमाशों पर 10 हजार का इनाम

अलीराजपुर (नप्र)। अलीराजपुर में जिला कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर शनिवार को जिला बंद का असर दिख रहा है। व्यापारी संघ ने जिला बंद का समर्थन किया है। शनिवार सुबह से बाजार बंद हैं। दरअसल, जिले के जोबट में शुक्रवार को एक ज्वेलरी शॉप में 5 हथियारबंद बदमाशों ने लूट को अंजाम दिया था। जिसके बाद जोबट के व्यापारियों ने आक्रोश जताया था। घटना के विरोध में आज प्रतिष्ठानों को बंद रखा है। एसपी राजेश व्यास ने लूटेरों की पहचान बताने वाले को 10,000 रुपए का इनाम देने की घोषणा की है। साथ ही मामले की जांच के लिए एसआईटी टीम का गठन कर किया है। एसपी ने साइबर टीम का गठन भी किया है।

दो मंजिला बेकरी धधकी, 80 लाख का सामान जला

भोपाल में बिजली के पोल से फैली आग; 25 दमकल 5 घंटे में बुझा सकीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बिस्किट, टोस्ट-ब्रेड बनाने वाली बेकरी की दो मंजिला इमारत शनिवार सुबह 5.30 बजे धधक उठी। लपटें इतनी तेज थीं कि आग बुझाने के लिए 25 दमकल और टैंकर को बुलाना पड़ा। सुबह 10 बजे तक आग पर पूरी तरह से काबू पाया जा सका, इसके लिए बिल्डिंग के आगे के हिस्से को भी तोड़ना पड़ा। घटना शहर के कबाड़खाना इलाके की है। संकरी गली और घनी बस्ती होने की वजह से आग आसपास के मकानों में भी फैलने का डर भी बना हुआ था। बेकरी मालिक का दावा है कि 80 लाख रुपए कीमत का सामान जल गया। बिल्डिंग भी जर्जर हो गई। आग बिजली के खंभे से बेकरी तक फैली थी। सुबह लोग जब बेकरी के पास से गुजरे, तब उन्हें बिजली के खंभे और बेकरी के शेड से धुआं उठता दिखा। इसके बाद फायर ब्रिगेड को खबर की गई। न्यू कबाड़खाना, फतेहगढ़, पुल बोगदा और बैरागढ़ से 5 दमकलें मौके पर पहुंचीं। इसके बाद एक - एक कर 20 दमकल को और बुलाया गया।दमकल कर्मी नौशाद खान के मुताबिक, सुबह 8.30 बजे तक लपटों पर काबू पाया, लेकिन रह-रहकर आग सुलग जाती थी।बेकरी में ऑयल, चीनी, मैदा जैसा सामान रखा था, इस वजह से आग तेजी से फैली।

दिन-रात होता है काम ...शुक्रवार रात काम बंद था

इस बेकरी में दिन-रात काम होता है। अच्छी बात यह रही कि शुक्रवार-शनिवार की रात में काम नहीं हो रहा था। इसी दौरान आग लग गई।

केबल के जरिए ओवन ने पकड़ी आग ...सबकुछ तबाह: बेकरी मालिक मजहर अली ने बताया कि आग में दोनों बड़े ओवन जल गए। एक 12 लाख रुपए, दूसरा सवा 6 लाख रुपए में खरीदा था। 1500 हजार ट्रे भी जल गईं। 9 लाख रुपए का कच्चा माल (मैदा, चीनी, तेल...) भरा था। कुल 80 लाख रुपए का नुकसान हुआ है। इंश्योरेंस नहीं है, लोन लेकर कारोबार खोला था। आग ने सबकुछ तबाह कर दिया। मजहर के मुताबिक, बेकरी से सटकर ही बिजली का पोल है।

कहानी

मोनिका डागा 'आनंद'

समीक्षक

तक़दीर या मजबूरी

ये क्या सीमा, 'मैंने सुना है तुमने तलाक नामे पर अपने हस्ताक्षर कर दिए क्या ये सच है सीमा' ? विवाह सात जन्मों का अटूट बंधन होता है, तुम राकेश को कैसे छोड़ सकती हो,और तो और तुम्हारे छोटे बच्चे भी है। गीता सीमा की सहेली बड़े ही आश्चर्यपूर्ण नजरों से सीमा से ये सब प्रश्न पूछती हैं।

तुम लोगों ने तो प्रेम विवाह भी किया था ना, सब कुछ इतना अच्छा था तो आज अचानक क्या हो गया, इतना सख्त निर्णय लिया है तुमने, इतना भी क्या मनमुटाव हो गया तुम दोनो के बीच, बच्चों के बारे में तो कुछ सोचा होता, गीता बिना रुके बोले ही जा रही थी, प्रश्नों की तो झंडियां लगा दी हो जैसे। तुम्हें एक बार फिर सोचना चाहिए सीमा इतना कठोर मत बनो, तुम्हारे बच्चों के बारे में सोचो थोड़ा , तुम्हारे मम्मी पापा की सहमति भी तुमने शादी के वक्त नहीं ली थी, कहां जाओगी ? क्या करोगी ? कुछ तो बोलो सीमा !

जैसे ही मुझे पता चला दो दिन से मैं तुमसे मिलने की कोशिश कर रही हूं ताकि तुम्हारे पास बैठकर बात कर सकूं तुम्हें समझा सकूं कि 5 साल में क्या तुम्हारा प्यार खत्म हो गया ? आखिर हुआ क्या ? मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा, क्या मैं राकेश से बात करूं इस विषय में ? सीमा प्लीज तुम ऐसा मत करो।

गीता की भावनाओं से द्रवित हो सीमा के सीने में छुपाए हुए दर्द का बांध टूट गया, जैसे शांत समुद्र में अचानक से सुनामी आ गया हो, सीमा अपने आंसुओं को रोक नहीं पाती है। थोड़ा चुप होकर फिर सीमा अपनी बात कहने की हिम्मत जुटाती है और कहती है, गीता ! मैं एक स्त्री हूं, मै एक मां हूं, एक पत्नी हूं, इस घर की बहू हूं, माता-पिता की बेटी हूं, मैं एक मित्र हूं और भी न जाने कितने रिश्तों से बंधी हूं, लेकिन गीता मैं कमजोर नहीं हूं, मेरा भी आत्म सम्मान है।

मैं राकेश से प्यार किया, इसका मुझे कोई दु:ख नहीं है लेकिन कोई बार-बार मेरे आत्मसम्मान को जानबूझकर ठेस पहुंचाएं और आपको कठपुतली की तरह नचाए, तो यह आत्मग्लानि आप बहुत दिन तक शायद बर्दाश्त नहीं कर पाओगे। आज मैंने यह कदम नहीं उठाया होता तो मेरा दर्द, मेरा टूटा हुआ विश्वास,मेरा दुःख मेरे बच्चों के भीतर भी पनपने लगता।

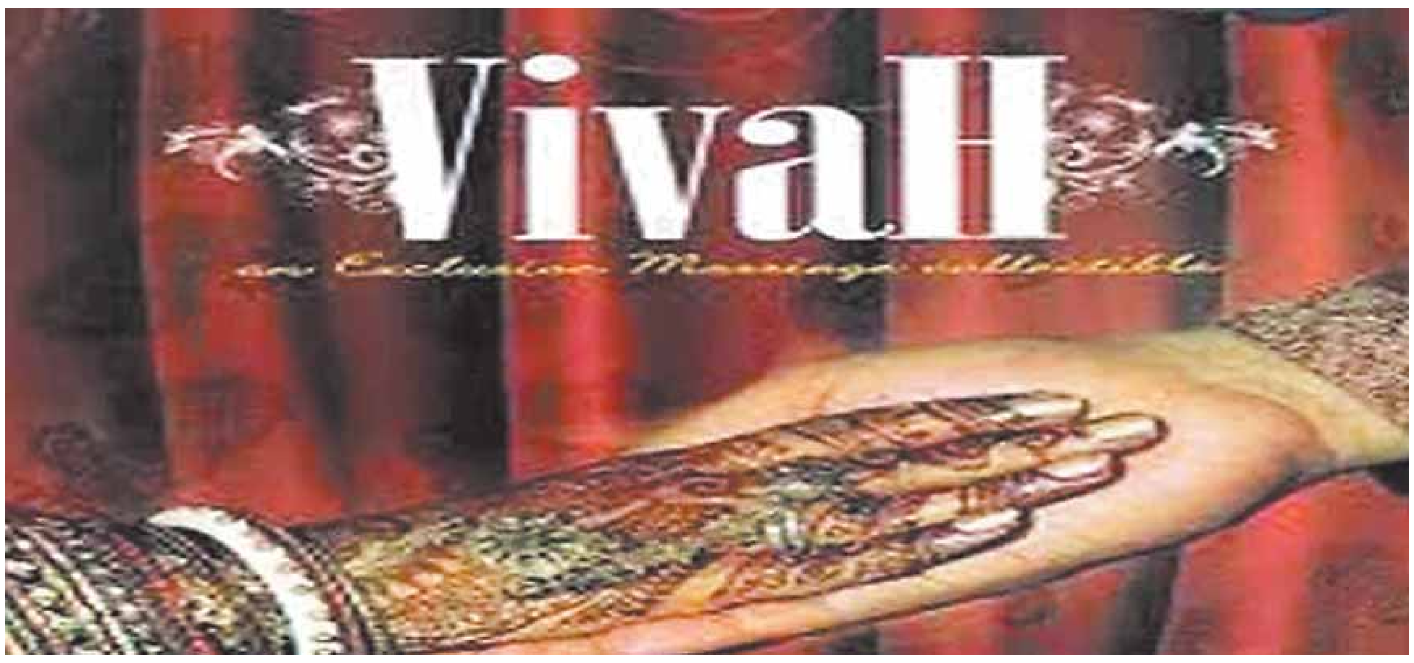

राकेश बिना वजह बार-बार मुझे ताने मारने लगे, मुझ पर हाथ भी उठाने लगे,ऊपर से घर-खर्च के लिए पैसे भी पूरे नहीं देते थे, मैंने क्या कसूर किया गीता राकेश पर भरोसा किया, मैंने उससे प्यार किया। उससे विवाह भी इस शर्त पर किया कि मैं अपनी पढ़ाई शादी के बाद पूरी करूंगी और फिर जॉब भी करूंगी, लेकिन उसने विवाह के बाद मुझे मना कर दिया। तुम्हें कमाने की कोई जरूरत नहीं है, मेरे घरवाले नहीं चाहते तुम काम करो। मैं कमा रहा हू ना...

गीता मैं वहां चुप रही कोई बात नहीं, मेरा परिवार मुझे प्यारा है, उसके बाद कुछ ना कुछ दिन प्रतिदिन नया घटता ही चला गया, आज मुझ पर हाथ उठाना तो बहुत नॉर्मल सी बात हो गई है, मेरे बच्चों पर मैं किसी को हाथ नहीं उठाने दूंगी। हर किसी को यह बात बता भी नहीं सकती इसलिए हिम्मत भी नहीं हुई कभी जिक्र करूं। लोग मुझ पर ही उंगली उठाएंगे, प्रेम विवाह किया ही क्यों ? लेकिन जरूरी नहीं की अरेंज मैरिज में यह घटना किसी के साथ घटित न हो, सब की तक़दीर अलग-अलग होती है, गीता ! सब अपनी-अपनी तक़दीर लिखा के लाते हैं, मेरी तक़दीर में शायद यहीं लिखा था।

मुझे तो दूसरी शादी करने का निमंत्रण पत्र भी सौंप दिया है राकेश ने और इसके पहले वह मुझसे अलग होना चाहता है। मैंने मेरे बच्चों के लिए कुछ मुआवजे के तौर पर एलीमनी भी स्वीकार की है। हालांकि इतने रुपए से जिंदगी नहीं गुजारी जा सकती और बिना पिता के बच्चों की अकेले परवरिश करना आसान नहीं है लेकिन मैं इस तरह से इस नरक से मुक्त हो जाऊंगी। मेरे बच्चे भी इस घरेलू हिंसा से सुरक्षित हो पाएंगे।

गीता हमारे प्यार का यह बंधन इतनी जल्दी टूट गया गीता ! यह देखो टेबल पर हमारे परिवार के सपनों की तस्वीर रखी है ,आज दो टुकड़ों में बट गई है, न जाने वह प्यार कहां चला गया, मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ गीता, क्यों ? सीमा पूरी तरह टूट चुकी थी। आज लग रहा था जैसे वह 5 साल पुराना दबा हुआ दर्द सीमा ने एकसाथ ज्यों का त्यों गीता के सामने लाकर रख दिया। सीमा ने आगे कहा, गीता ! ,

मैं अपनी गलती की सजा अपने बच्चों को नहीं भुगतने दूंगी,अपनी पढ़ाई भी पूरी करूंगी और आत्मसम्मान के साथ अपने बच्चों को भी आगे बढ़ाऊंगी। यह सब सुनकर गीता की आंखों से आंसू बहने लग जाते हैं,सीमा तुम अपने दिल में इतना कुछ छुपा कर रखी थी, गीता, सीमा को गले से लगा लेती है और दोनों फूट-फूटकर रोते हैं, जैसे आज बिना बादल के बेमौसम मूसलाधार वर्षा हो रही हो।

समाज में ऐसे ही कई महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं और फिर अंत में उनके पास कुछ भी नहीं बच पाता है, सिवाय दर्द के। या तो वह दर्द का घुट पीकर आगे बढ़ जाए या फिर इसी दलदल में पड़ी रहे और मौत को स्वीकार लें। इसलिए घरेलू हिंसा को छुपाना सही नहीं है। हमारे साथ यदी कहीं गलत हो रहा है तो तुरंत आवाज उठाइये, सरकार ने इसके लिए कानून बनाए हैं। औरतों की सुरक्षा की व्यवस्था की है। कुछ भी गलत हो बिल्कुल भी बर्दाश्त मत कीजिए, आप ये सोचते होंगे कि लोग क्या कहेंगे, समाज को क्या ज़वाब देंगे तो यह जान लिजिए, यह घरेलू हिंसा लोगों को नुकसान नहीं पहुंचाएगी, बल्कि आपको तोड़ के रख देंगी, इसीलिए गलत यदि है कहीं और आपके साथ गलत हो रहा है तो ज़रूर आवाज उठाइए। साथ ही जल्दी बाजी में प्रेम विवाह के बंधन में मत बंधिए, सोच समझ कर, बड़ों की सहमति लेकर तभी विवाह कीजिए, यदि आप इस बंधन को पूरी तरह निभा सकते हैं, वरना एक ग़लत फैसले से कई सारी जिन्दगियां बर्बाद होती है।

कुछ सामयिक दोहे

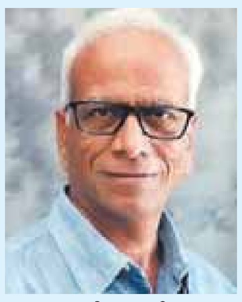

ओम वर्मा

बिछती अब शतरंज में, ऐसी अजब बिसात।
हो सकती है शाह की,
प्यादे से ही मात॥
डरा रहे वे पाक से, बम है उनके पास।
शायद उनका हट गया, गांधी से विश्वास॥
तन से हैं वे देश में, मन से पाकिस्तान।
कई बार गिरवा चुके, अपने दल की शान॥
बोले थे वे पाक में, मदद करो यदि यार।
बन न सकेगी हिंद में, मोदी की सरकार॥
कोई पप्पू कह रहा, कोई तानाशाह।
सिसक रही शालीनता, कौन करे परवाह॥
जिस दल को चिरकुट कहा,
कहा 'न देना वोट'।
उसमें अब अखिलेश को,
नज़र न आती खोट॥
है विरोध यह चार दिन, फिर बोलेगा कौन।
मगरमच्छ के ताल में, मछली रहती मौन॥
कुछ नेता के देश में, अजब गज़ब हैं हाल।
अब तो उनकी पाक भी, देने लगा मिसाल॥
छब्बे जी बनने चले, चौबे जी इस बार।
बना न दे जनता दुबे, तुमको मेरे यार॥
जब तक गंगा तट रहे, थे वे गंगादास।
अब वे जमुनादास हैं, जमुना तट आवास॥
एक बड़ा दल इस समय, है वाशिंग मशीन।
आरोपित हो लाख का,
निकले बनकर क्लीन॥।

कहानी

शिल्पी पचौरी

जड़

मरा, कमबख्त ,बैरी चूहा जाने कौन-सी घड़ी थी जो वह घर में घुस गया। घर के शांत वातावरण को कैसे उथल-पुथल का आंतक मचा दिया।मुझे तो इसे देखकर वैसे ही डर लगता है ऊपर से घिन भी आती है। गुसलखाने, बालकनी ,कमरे , सड़क, गंदगी जाने कैसी कैसी जगह तो घूमता है और फिर रसोई में भी आ जाता है। सारी चीजें गंदी कर देता हैं।कपड़े, अखबार कुतरते तो हमेशा ही सुना था लेकिन हद तो तब हो गई,नाशमिटा चूहा जब मनीप्लांट खा गया और तो और तुलसी भी खा गया।

हरी-हरी ,सुंदर लहलहाती हुई कितनी सुंदर तुलसा माता सारे आँगन को एक अलग ही ऊर्जा व शांति सी प्रदान करती हुई दिखती व मनी प्लांट भी एक गमले से निकलकर दीवार में, दीवाना सा जाल बिछा कर यहा वहां फैल गया था किन्तु चूहे के हुड़दंग ने आज सब तहस-नहस कर दिया। खिला-खिला और सदाबहार आँगन आज उजड़ा चमन लग रहा था। तृप्ति लगातार बड़बड़ा रही थी। सवेरे जल्दी उठकर पूजा-पाठ करना सूर्य को अर्घ्य देना फिर अपनी बगिया सँवारना उसकी दिनचर्या थी। गणेश जी पर उसकी खास आस्था थी किंतु उस दिन गुस्से में यह भी भूल गई कि मूषक गणेशजी भगवान का वाहक है और बोली कि बुद्धि के देवता का वाहन एक बेअक्ल जीव कैसे हो गया।

तब बहुत देर तक उसका बड़बड़ाना सुनकर अंकुश से रहा नहीं गया। उसने अंदर से आवाज लगाई तृप्ति.....तृप्ति तृप्ति ... किन्तु उसे अपने आगे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। तभी अंकुश ने उसे हाथ से पकड़कर कहा अरे अब बस भी करो कितना गुस्सा करोगी। अदना सा जीव है बहुत कोस लिया। पिंजरा लगाकर चूहे को पकड़ लेंगे। तुम आराम से अपनी बगिया सजाना।

वह झुंझलाकर बोली ,अंकुश तुम नहीं समझोगे, यह पौधे मैंने अपने बच्चों जैसे सहज रखे थे। रोज सुबह-शाम जब तक इनके पास न बैठ लूँ तो मुझे सुकून नहीं मिलता। अच्छा बाबा अब समझ गया, मैं आज ही नर्सरी से नया पौधा ले आता हूं। यह कहकर अंकुश वहां से चला गया। तृप्ति उन बिखरे पत्तों व पौधों को समेटने लगी और एक आध पत्ते व बची हुई जड़ को गमले में रोपकर अपने काम में लग गई। मन ही मन पौधौं से माफी मांगी। मुझे माफ़ करना मैं तुम्हारा ख्याल नहीं रख सकी लेकिन अब की बार तुम्हें कभी खुद से अलग नहीं करूँगी।

जानती हूँ तुम्हारे बचने की उम्मीद बहुत कम है लेकिन फिर भी मेरा तुमसे आग्रह है कि अगर हो सके तो पुनः खिल उठना ।बहुत छोटी सी बेल जो शायद दूर से दिखाई भी न दे उसे गमले में लगाकर तृप्ति उससे बतियाकर खुद को समझा रही थी।शाम को दफ़्तर से आते समय अंकुश जेड प्लांट का पौधा ले आये और बोले मैडम इसे लगाओ ।यह पौधा ज्यादा पानी भी नहीं मांगता व बढ़कर बहुत सुंदर लगता है और ये तुलसी जी सड़क के उस तरफ लगी थी तो मैं ले आया। तृप्ति ने उन गमलों को दरवाजे के बाहर चौक में रख दिया जहाँ चूहा न पहुंच सके ,साथ ही उसने नाउम्मीद को उम्मीद में बदलने की मंशा लिए मनी प्लांट की छुटकी सी बेल लगा हुआ गमला भी बाहर रख लिया।वहां से निकलने वाले लोग उसे टोकते कि खाली गमला क्यों रख रहा है।इसमें कुछ लगा क्यों नहीं लेती वो यह सुनकर चुपचाप भीतर चली जाती और सोचती कि काश वो जड़ हरी हो जाए।सोचते-सोचते वो गहराई में डूब गई कि ÷जड़÷ कितना छोटा शब्द है लेकिन इसके मायने उतने ही गहरे। पेड़ के लिए सबसे जरूरी अंग है जड़, बुजुर्गों के लिए उनका गांव है जड़, बच्चों के लिए संस्कार है जड़ ,हर एक रिश्ते में भरोसा है जड़ ,हर जगह जड़ की अपनी-अपनी अहम भूमिका है ।कवायद है जड़ों को बनाये रखने कि भले सब मिट जाए तब भी जड़ बची रहे तो जीवित रहती है हर आशा कि सब ठीक हो सकता है।इसलिए जड़ को, जड़ से कभी जुदा नहीं करना चाहिए।कुछ दिन बाद मनी प्लांट से एक पत्ता निकल आया और तृप्ति के ज़ेहन को तृप्त कर गया कि आखिर जड़ से ही नवसृजन सम्भव है।

छोटी कहानी

अमर खनूजा चड्ढा

खरीदी

कुदरत हर मौसम के ज़रिए पालन पोषण करती है साथ ही हमें अपने संदेश देती रहती है और हम हैं कि इसके सार को समझ नहीं पाते.जाने कौन सी आपाधापी में सुख चैन गँवा कर फिर प्रकृति की हरियाली गोद में सुकून की तलाश में भटकते हैं। ग्रीष्म ऋतु ने दस्तक देने लगी है।

पीले गहरे हरे रंग के सूखे पत्तों की सरसराहट आंगन में सुनाई देने लगी. हरी घास ने रंग बदल दिया जैसे ढेर सारी हल्दी उस पर बिखर गई.अब तो पक्षियों के परों की फड़फड़ाहट और आवाज़ बेचैन करने लगी.किसी भी तरह समय निकालकर आज ही घर के लिए मिट्टी का घड़ा और आसमान के उड़ते फ़रिश्तों परिंदों के लिये जल रखने हेतु सकोरे लाने होंगे! ऑफ़िस से घर लौटते समय रास्ते में खुले मैदान पर नज़र पड़ी. पेड़ों के घने झुरमुट के नीचे कुछ महिलाएँ और पुरुष टेंट लगाकर जैसे बस्ती बसा चुके थे .बहुत सारे मटके क़रीने से एक के ऊपर जमा थे . कुछ सादे थे कुछ में नल लगे थे.पास ही बच्चे हवा निकले फुटबॉल से खेल रहे थे। पेड़ की टहनी पर रस्सी से बांधे गए झूले में नवजात शिशु मीठी मुस्कान लिए पत्तियों की आवाज़ सुनते और उन्हें पकड़ने की कोशिश में लगा था. घड़ा बेचने वाली महिला पर नज़र पड़ी . उसके सांवले रंग पर पीले रंग की फूलदार चोली और नीले रंग का घाघरा साथ में हरे रंग की पुराना गोटा लगी सूती चूनर बहुत जँच रही थी. पान खाने से उसके पतले होंठों पर रंगत चढ़ गई थी. गिलट के गहने उसके हाथ पैर में खिलखिलाहट कर रहे थे.माथे पर सजा बोडला जैसे उसकी हाँ या ना से दोलायमान हो रहा था।

समय मिलते ही वह खुद पर हाथ पंखा झल रही थी और साथ खेलते बच्चों को निर्देश भी देती जा रही थी . उसका साथी पुरुष सफ़ेद बंडी धोती पहने था जो अब मटियारे रंग की हो चुकी थी. उसने हल्के पीले रंग का साफ़ा बहुत क़रीने से पहना हुआ था .मटके इधर उधर रखते,जमाते, दिखाते उसके माथे से पसीने की धार को वह गमछे से पोंछता जाता था और उसी से अपने ऊपर पंखे से झलता जा रहा था. झोपड़ी के बाहर एक किशोरवय युवती मोबाइल में व्यस्त थी जो अपने पास बैठी बुजुर्ग महिला को भी कुछ दिखाती जा रही थी जिसे देख दोनों की हँसी छूट रही थी. साथ बनी झोपड़ी में एक महिला घड़े में भर लाये पानी को उँडेल रही थी और एक युवा पुरुष चारपाई पर दो बच्चों को सम्भाले बैठा था!

अब मेरी नज़र फिर से मटकों पर पड़ी .मेरे मन को आनंदित करते नयनों को तृप्त करते रंग बिरंगे घड़े क़रीने से जमा थे . गहरे भूरे रंग के घड़ों में हरे पीले नीले लाल रंग के फूल पत्ते सजे दिख रहे थे मानो गर्मी की कातर पुकार सुन वे प्रकृति के नज़ारे लिए आँखों को सुकून दे रहे थे.लंबे आकार के घड़े में नल की टोंटी भी लगी हुई थी कुछ घड़े नक़्क़ाशीदार थी जिनमें मेहराब सी बनी हुई थी.

मेरे समीप दो एक महिलाएँ अपने पति के साथ ख़रीदारी के लिए खड़ी थीं.एक महिला ने अपनी पसंद का घड़ा चुन रखा था.मध्यवय की महिला ने मौसम के अनुरूप ही सूती साड़ी पहनी हुई थी हाथ में सब्ज़ी का थैला था।

उसने मोलभाव करना शुरू किया. बताये गए भाव 20 रुपये कम करवाने पर उसके चेहरे पर संतुष्टि दिख रही थी.विक्रेता महिला ने उसकी बात रख ली और मेरी तरफ़ नज़र उठा कर जैसे कहना चाह आप भी अब सामान पसंद कर उसी भाव में ले लो. उसकी नज़रों के सामने बच्चे खेल रहे थे ।

संझा के समय का चूल्हा चौका उसे बुला रहा था .मैंने उसके बताये दाम से बीस रुपये ज़्यादा देकर एक घड़ा और कुछ सकोरे ख़रीदे . उसकी मोहक मुस्कान और धन्यवाद देती आँखों के सामने मेरी आज की थकान दूर हो गई।

पुस्तक समीक्षा

अरुण अर्णव खरे

समीक्षक

पढ़े जाने योग्य कृति है 'एक पाव सच'

कुछ दिन पहले जब मुझे राजेन्द्र गट्टानी का व्यंग्य कविता संग्रह 'एक पाव सच' प्राप्त हुआ तो दो कारणों से उसे पढ़ने और फिर कुछ लिखने की उत्कंठा हुई। प्रथम तो यह कि श्री गट्टानी दसाधिक वर्षों से परिचित हैं लेकिन उनके कवि रूप से परिचय दो वर्ष पहले ही हुआ था। दूसरा उनका यह सद्य प्रकाशित कविता संग्रह एक व्यंग्य संग्रह है इसलिए एक व्यंग्यकार के नाते उनके संग्रह को पढ़ने का लोभ संवरण नहीं कर सका। पुस्तक का व्यंजनात्मक शीर्षक भी पुस्तक के व्यंग्य संग्रह होने की ओर इंगित करता है अतएव 43 कविताओं से सज्जित 102 पृष्ठों की इस पुस्तक को एक बैठक में ही पढ़ गया।

शीर्षक कविता 'एक पाव सच' आज के समय का सच है जिससे सब परिचित हैं। जिस सच से सब परिचित हों उसे कविता में ढालना अचरज पैदा नहीं करता लेकिन शब्दों की बुनावट और कहन की शैली ही कविता को विशिष्ट बनाती है। यह कविता इस मायने से विशिष्ट बन गई है और पाठक की चेतना को झकझोरने में सफल है। सच का आज समाज में क्या स्थान रह गया है इन पंक्तियों में पूरी बेबाक़ी से उभर कर आया है - 'आठ दिन पहले / इसके पास एक ग्राहक आया था / और किसी की शवयात्रा में / राम नाम सत्य करने के लिए / एक पाव सच ले गया था / उसमें से भी बचाकर / वापस दे गया था /

संग्रह की 'अ नाम की बीमारी' भी एक अच्छी रचना है। इस रचना में कवि ने एक सहज और सरल बात को नए कोण से देखा, परखा और उसे एक गंभीर रचना का स्वरूप दे दिया जो उनकी विँषय पर पकड़ और उसकी भलीभाँति पड़ताल करने प्रवृत्ति को दर्शाती है। कविता की शुरुआती पंक्तियाँ ही ध्यान आकृष्ट करने में सक्षम हैं। देखिए -

तुमने सुना / अब वह हमारे बीच नहीं रही / कौन / अरे वही नैतिकता / ओह तो नैतिकता मर गई / कितनी भली थी बेचारी / मगर पिछले दिनों उसे लग गई थी / 'अ' नाम की बीमारी /

संग्रह में कुछ रचनाएँ छंदबद्ध भी हैं। ऐसी रचनाओं में

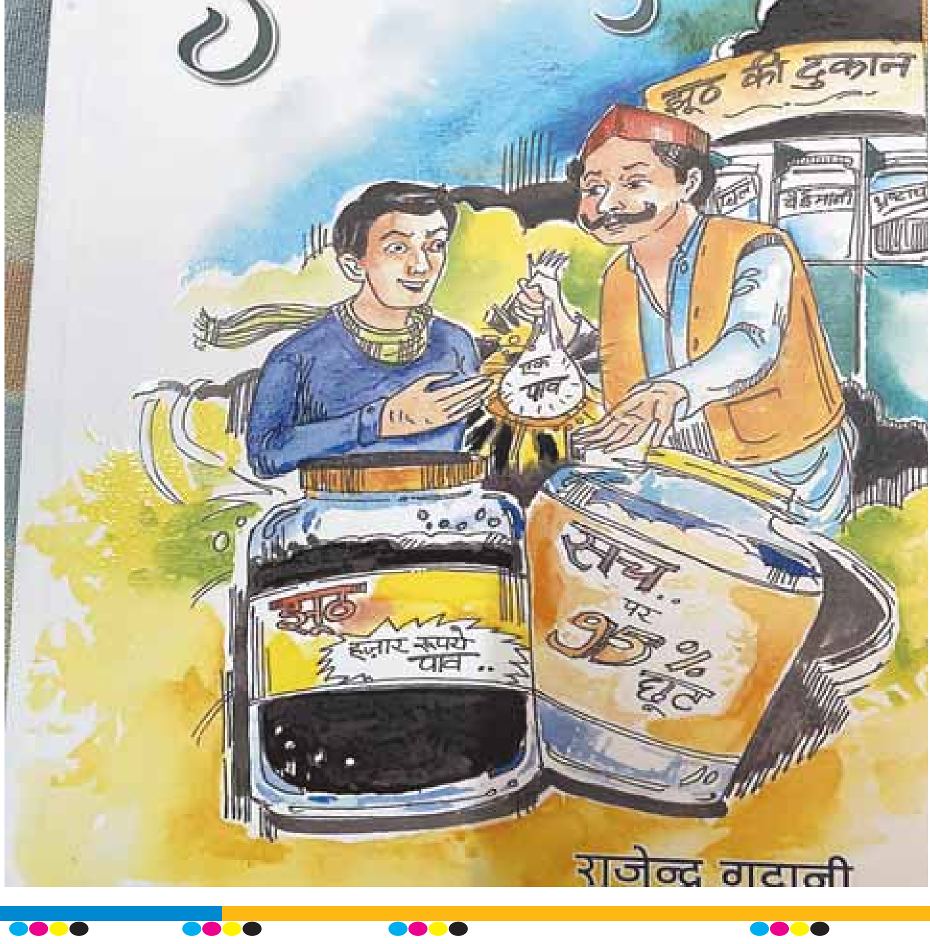

झांकी हिंदुस्तान की, मेरा टेसू तथा सुखघाम माँगने आया हूँ प्रभावित करती हैं। ग़ज़ल के मीटर में लिखी गई 'जीने का पैमाना सीख' रचना के कुछ शेरों में गंभीर बात भी जिस सहजता के साथ कही गई है वह क़ाबिले तारीफ़ है। देखिए

बड़े बड़ों की पोल खोल दे,
ऐसा सच झुठलाना सीख।
जैसी सरगम बजे उसी पर,
अपना गीत सुनाना सीख।

संग्रह की अनेक कविताएँ मंचीय शैली की हास्य कविताएँ हैं जिन्हें मंच पर सुनने में ही आनंद आएगा। पढ़ने पर वे पाठक को गुदगुदा भले दें लेकिन उसके मन पर अमिट प्रभाव नहीं डाल पाएँगी।

कुछ कविताएँ अत्यंत छोटी, क्षणिकानुमा तथा चुटकुलों के आधार पर रची गईं हैं। मेरा मानना है व्यंग्य संग्रह में इन कविताओं को शामिल करने की ज़रूरत नहीं थी। व्यंग्य एक गंभीर विधा है और चुटकुला आधारित कविताएँ खाने में कंकड़ आ जाने की तरह हैं। घास के लिए घाँस और टोकते के लिए टोंकते शब्द भी अखरते हैं।

कुल मिलाकर राजेन्द्र गट्टानी जी का दूसरा कविता संग्रह 'एक पाव सच' पढ़े जाने योग्य कृति है। कविताओं के विषय लीक से हटकर हैं जो इस संग्रह की एक अन्य विशेषता है। संग्रह की हर कविता के संग रेखाचित्र दिए गए हैं। कुछ अच्छे भी है और कविता की विषय वस्तु के अनुरूप भी, लेकिन फिर कहूँगा कि पुस्तक में रेखाचित्र नहीं होने चाहिए, ख़ासकर व्यंग्य संग्रह में। पढ़ते हुए पाठक स्वयं अपने मन में जो रेखाचित्र बनाता है वह ज़्यादा महत्वपूर्ण है। वैसे यह लेखक की अपनी रुचि का मामला है।

पुस्तक: एक पाव सच
कवि: राजेन्द्र गट्टानी
पृष्ठ: 102
मूल्य: 250/-
प्रकाशक: ऋषिमुनि प्रकाशन, उज्जैन

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कलाकार रामकुमार, उनके चित्र और भावों का विशाल सागर

अमूर्त भूदृश्य चित्रकार रामकुमार अपने में ही अथाह सागर ढूढ़ने वाले शालीन, संकोची बचपन से ही सीमित दायरे में रहना पसंद करते थे पर कृतियाँ दायरों के बंधनों से मुक्त थीं शायद यही वजह है उनके अधिकतर कृतियों का 'अन्टाइटल्ड' रह जाना जहाँ वो ग्राही को पूर्णतः स्वतंत्र छोड़ देते हैं भावों के विशाल या यूँ कहें असीमित जंगल में भटक जाने हेतु। किसी से मिलना जुलना भी कम ही किया करते थे। उन्हे सिर्फ और सिर्फ प्रकृति के सानिध्य में रहना अच्छा लगता था - उनका अन्तर्मुखी होना शायद इसी वजह से सम्भव हो सका और सम्भव हो सका धूमिल रंगों तथा डिफरेंट टेक्स्चरों से युक्त सम्मोहित-सा करता गीत।

कलाकार शैलोज मुखर्जी के सानिध्य में आते ही रामकुमार कला के प्रति बावले-से हो उठे। उकील कला विद्यालय के इवनिंग कक्षाओं में बारीकियाँ सीखने के बाद इन्हे आगे की शिक्षा हेतु पेरिस जाना पड़ा जहाँ आन्द्रे लहोत तथा फर्नाण्ड लींगर के निर्देशन में इनके कला को और धार मिली। लींगर के कला का ही असर रहा कि क्यूविज्म को इतनी अधीरता से अपनाने में सफल हुए कलाकार रामकुमार, जिसकी जकड़ से ये कभी मुक्त नही हो पाये और जो इनकी पहचान बनी। मनुष्य जिस दशा को जी रहा होता है, जो कुछ भी आस-पास घटित हो रहा होता है उसी के सापेक्ष ही अधिकतर का सोचना होता है पर उससे इतर सोच पाना ही एक सफल कलाकार का कौशल माना जाता है जो हमें जीवन के गूढ़ रहस्यों के अधिक निकट ले जाने में सक्षम हो, तभी तो हसीन वादियों के इस कलाकार के अधिकतर शुरूआती चित्रों में ब्लैकिस व ब्राउनिस टोन की अधिकता है जो कहीं से भी जीवन की सम्पन्नता को उजागर नही करता। शिमला के खुबियों के सम्पन्नता के बीच दबे दमित कुंठित विभाजन में विस्थापित भावनावों के संकलन इनके फिगरेटिव कृतियों में स्पष्टतः उजागर है जो मानव जीवन के भयावह समय को दर्शाता है। एक ऐसा कलाकार जो बचपन में ही चीड़ के पेड़ों से मोहब्बत कर बैठा, जिसके फल व पत्ते तोड़ने वाले भी उसे राक्षस जान पड़ते थे, जो चीड़ के फलों को तोड़ लिए जाने पर झरे हुए पत्तों को देखकर घण्टों रोता रहा, रात को खाना तक नही खाया, प्रकृति प्रेम उसके चित्रों में आसानी से देखा जा सकता है, जिया जा सकता है प्रकृति का असली वजूद उनके चित्रों का दीदार करके। शिमला में पैदा होने की वजह से ही उनके बनारस के चित्रों में भी कुछ-कुछ पर्वतीय छवि दिखाई देती है यानी शिमला के पहाड़ बनारस की गलियों, घाटों में आकर समाहित से हो गये हैं। बनारस जो कई नामों से जाना जाता है, जहाँ मस्ती, सरलता, बम-बम के बोल, निश्छलता, मानवता, सांस्कृतिक-समभाव, मिलनसार व्यक्तित्व की गहनता, धर्म और संस्कृति की प्राचीनता स्पष्ट झलकती है, जहाँ का अतीत ही रहा है कि जो यहाँ आया यहीं का हो गया और बनारसी खुमार से बच नही पाया - कुछ ऐसा ही रामकुमार के साथ भी हुआ। रामकुमार को बनारस में अपना व दृश्यकला का भविष्य दिखाई दे रहा था। यही वजह है कि बनारस ही रामकुमार की पहचान बनी। शुरूआती बनारस घाट के भूदृश्यों में रामकुमार ने चित्रों की गंभीरता को दर्शाया है जो डार्कनेस की वजह से और भी सटीक प्रतीत होते हैं और कलाकार मझे हुए चित्रकारों की श्रेणी में आ खड़ा होता है। आकृतियां आयत व वृत्त के बड़े-बड़े पैचेज तक भले ही सिमट गयी हों पर इसी बहाने भारतीय कला में आव्स्ट्रैक्ट आर्ट का एक नया प्रतिमान गढ़ा जा रहा था। कहना गलत ना होगा कि भारतीय चित्रकला में अमूर्तता विशेषतः भूदृश्य चित्रों में शुरूआत करने वाले पहले भारतीय चित्रकार रामकुमार ही हैं।

भारतीय दर्शन को ज्यामितीयता का अमली जामा पहनाने का प्रथम श्रेय भी इन्हीं को जाता है। इनके 60 के दशक के भूदृश्य चित्रों विशेषतः बनारस श्रृंखला में अधिकतर चित्र काले और भूरे रंगों की गहरी पृष्ठभूमि से सजे हुए हैं जो बनारस को भी एक नये अध्याय के रूप में प्रस्तुत करते हैं। गहरे सन्नाटे में बिथा घाट,ज्यामितीय आकृतियों में गलियां, काले भूरे रंगों की वजह से गहरी अभिव्यक्ति को प्रकट करते हैं और कहीं न कहीं से शिव जैसी विशाल, न समझ पाने वाली दुनिया का सृजन भी करते हैं। हालांकि बनारस विषाद से भरा शहर नही हो सकता ये तो हरफनमौलाओं का शहर है पर इनके चित्रों में बनारस एक नये ही रूप में प्रस्तुत हुआ है। धीरे-धीरे समय के साथ इनके चित्रों में नीले और पीले रंगो की छाप भी दिखने लगती है आगे के चित्र और भी रंगीन होते गये हैं साथ ही जो गंभीरता शुरू के चित्रों में थी फीकी पड़ती गयी है। कम बोलने व मिलने वाले रामकुमार अपनी कृतियों में खुलकर बतियाते हैं फिर चाहे वह कहानी हो या चित्र। बन्धन से परे अपने पर को खोलकर ये समाज के दुःख, दर्द यथा बेरोजगारी, बेकारी, दिन-ब-दिन नष्ट होती मानवीयता पर स्पष्ट तूलिका संचालन करते हैं जो ज्यामितीय व गहरे रंग संयोजन की वजह से और भी सटीक तरीके से उजागर हुआ है। निश्चित आयाम, संतुलन तथा सामंजस्य जो सौंदर्य की विशेषतायें हैं रामकुमार के चित्रों में भी कायम है अर्थात सौंदर्यबोध की दृष्टि से भी इनके चित्र अनमोल हैं। बड़े ही धीरे से अपने कृतियों के माध्यम से सौंदर्यबोध के साथ ही पर्यावरण के रोचक रहस्यों को भी प्रस्तुत कर देने में रामकुमार को महारत हासिल है। भारत में और बाहर भी तमाम सफल प्रदर्शनियां करने वाले और बिकने वाले रामकुमार का मुख्य उद्देश्य मानवदशा पर चिंतन करना और उसके अनुभूतियों को उजागर करना था जो प्रथमतः छोटी-छोटी कहानियों के रूप में स्फुटित हुई और आगे चलकर विशालतम रूप अख्तियार कर ली। चित्रों में शुरूआती चित्र फिगरेटिव पोर्ट्रेट जैसे हैं जो अर्बन वातावरण की निरीहता को दर्शाते हैं। लाचार, निराश, भूखा, मरियल, हतास व्यक्तित्वों का रामकुमार के फलक पर जगह पाना और समस्त बेवशी का उदास आँखों में समा जाना उनके आम इंसान के प्रति उनकी सहानुभूति की ही उपज है।

1975 में निर्मित अन्टाइटल्ड वर्क (इंक ऐण्ड वैक्स आन पेपर) में एक व्यथित मनुष्य की वेदना इसी का उदाहरण है। इनकी कला कृतियाँ खुद अपनी बात कह पाने में सक्षम है। भूमि, आसमान, कौतुहल, विस्मय, पीड़ा, बोझ, खण्डहर, घाट, परिवार, शहर जैसे इनके अधिकतर चित्रों में विषाद की भरमार है। पेरिस, प्राग, कोलम्बो, पोलैंड, अमेरिका आदि जगहों पर व्यक्तिगत प्रर्दशनी करने वाले रामकुमार भारतीय लोककलाओं पर भी अधिकार रखते हैं।

उनके बाद के चित्रों को देखकर कहा जा सकता है कि समय के साथ ही उनके एकाकी व्यक्तित्व में भी निखार आया है। पर यह निखार रचनाओं की गम्भीरता को कहीं से भी कमतर नही होने देता, रंगों में भले ही विविधता रही हो पर धूमिलता और उदाशीनता सदा ही कायम रही है यही वजह है कि उनके अधिकतर चित्रों मे प्रकृति का नैसर्गिक रूप परिलक्षित नहीं हुआ है बल्कि पैचेज और ज्यामितियों से खेलते हुए ही आखिरी समय तक उनका सफर जारी रहा। जहाँ कहीं झरोखों से युक्त बनारस नजर आता है वहाँ गोल्डेन यलो का प्रयोग चित्र को जीवंत बना देता है। ज्यामितीय आकृतियों - युक्त छोटे-छोटे मोनोक्रोमिक मंदिर, काली-काली पट्टियाँ लाल रंग के बिंदियों का प्रयोग बनारस को रहस्यमयी बना देते हैं। टूटे-फूटे लकड़ियों का दिवालों में खोंस देना डिस्टर्ब रेखाओं का प्रयोग, सैप ग्रीन, यलो, डार्क ब्लू के परफेक्ट स्ट्रोकों के बीच बड़े-बड़े व्हाइट पैचेज-युक्त सीढ़ियां जो परिप्रेक्षानुसार धीरे-धीरे घटती गयी है - बनारस को मोक्ष द्वार के रूप में उजागर करती हुई सी प्रतीत हुई हैं।

तापमान

डॉ. घनश्याम बटवाल

लेखक स्तंभकार हैं।

हाय गर्मी-जिम्मेदार कौन?

यह ठीक है कि प्राकृर्तिक रूप से मौसम का मिजाज बदलता रहता है, सर्दी गर्मी बरसात के बीच बसंत, शरद पूर्णिमा, मकर संक्रांति, सावन - भादो, बैसाखी आदि के उत्सव पर्व आते हैं, पर बीते दो दशकों में ऋतु परिवर्तन चक्र में तेजी से बदलाव हुआ है। अब कभी भी कोई मौसमी चेंज हम देख और भोग रहे हैं। इसके दुष्प्रभाव प्राणी मात्र को भोगने पड़ रहे हैं पर हम हैं कि मानने - जानने - समझने - सुधरने को तैयार नहीं हैं। यही स्थिति रही तो जलसंकट के साथ पर्यावरण संकट गंभीर अवस्था में होगा। कहावत प्रसिद्ध है कि 'पग पग रोटी डग डग नीर' से परिभाषित होने वाले मध्यप्रदेश के एक बड़े हिस्से की यह पहचान में अब मौसम बदल रहा है, मध्यप्रदेश ही नहीं मालवा निमाड़ सहित पूरे देश का चेहरा इस गर्मी में तमतमा रहा है।

अब हर साल मई-जून आते ही पारा बढ़ने पर अखबारों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सुर्खियां डराने लगी हैं। इस डर को बढ़ाने में बाजार के उत्पादों का खेल भी शामिल है। कहीं से तो पारा 47 डिग्री पहुँचने की खबर भी आई है। आने वाले दिनों में तापमान बढ़ने व ऑरेंज अलर्ट की चेतावनी लू को लेकर मौसम विज्ञान ने दी है। हर रोज एक नई खबर होती है कि फलां दिन अब तक सबसे गर्म रहा। इतने सालों का रिकॉर्ड टूट गया। निश्चित रूप से खेत में काम करते किसान, खुले में जीविका के लिए पसीना बहाते कामगार व आम नागरिकों के लिये यह चुनौतीपूर्ण समय होता है। बच्चों के लिये यह समय विकट जरूर होता है, जिसके चलते देश के लगभग सभी राज्यों में जून माह में बच्चों की छुट्टियां घोषित हुई हैं।

यह समय खासकर बुजुर्गों व पहले ही कई रोगों से पीड़ित लोगों के लिये खास सावधानी की मांग करता है।

साथ ही पशुओं पक्षियों, वन्य जीवों के लिए भी जलस्त्रोतों के रीते होने से समस्या बढ़ी है। ऐसे में यदि बिजली की कटौती सामने आए तो और कष्टदायक होता है। यह भी सत्य है कि इस मौसम में बिजली की खपत अचानक बढ़ने और जल प्रवाह में कमी से बिजली आपूर्ति प्रभावित होती है। जाहिर है बिजली की कटौती परिस्थितिजन्य भी होती है। देश प्रदेश के कई हिस्सों में भीषण गर्मी की हिटवेव चल रही है।

इस बीच एक अच्छी खबर (मौसम विभाग आंकलन अनुसार) यह भी है कि मानसून देश में एक दिन पहले आ जाएगा और इस बार भरपूर मानसून बरसने की भविष्यवाणी भी की जा रही है? लेकिन हमें मानकर चलना चाहिए कि ग्लोबल वार्मिंग से मौसम के मिजाज में तल्खी आ रही है। अफगानिस्तान, ब्राजील समेत कई देश अप्रत्याशित बाढ़ का सामना कर रहे हैं। हिमालय के आंगन उत्तराखंड में वन सुलग रहे हैं ग्लेशियर पिघल रहे हैं। जाहिर है पूरे देश को प्राणवायु देने वाले जंगलों के जलने का असर पूरे देश के तापमान पर पड़ेगा। ऐसे में हर नागरिक मान ले कि हमने प्राणवायु देने वाले जंगलों को जिस बेरहमी से काटकर कंक्रीट के जंगल उगाए हैं, उसका असर तापमान में अप्रत्याशित वृद्धि के रूप में तो सामने आएगा ही। हमें और अधिक गर्मी के लिये तैयार रहना होगा। यह सबके सामने है कि हिमाचल के शिमला, समंदर किनारे के चेन्नई, मेट्रो सिटी बेंगलुरू जैसे शहरों में पेयजल संकट जैसी स्थिति है। जिले में जनपद में, नगरीय क्षेत्रों में ही नहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी जलसंकट गहराता जारहा है। तात्कालिक चिल्ला चोंट होती है आनन फ़ानन में कुछ व्यवस्था कराई जाती हैं और मानसून आया बरसात हुई और फ़िर सब शांत?

आधुनिक हम इतने हैं कि गंभीर संकट के प्रति केवल ओर केवल प्रतिक्रिया देते हैं, ज्ञान बांटते हैं, ओर मौसम विभाग, गोठड़ा माताजी की भविष्यवाणी से संतोष कर लेते हैं। हमारे पूर्वजों ने प्रकृति के अनुरूप जैसी जीवन शैली विकसित की थी, वह हमें कुदरत के चरम से और असामान्य स्थितियों से बचाती थी। हम महसूस करें कि बढ़ती जनसंख्या का संसाधनों में बढ़ता दबाव भी तापमान की वृद्धि का कारण है। बड़ी विकास परियोजनाओं व खनन के लिये जिस तरह जंगलों को उजाड़ा गया, उसका खमियाजा हमें और आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। विलासिता के साधनों, वातानुकूलन के मोह और कार्बन उगलते वाहनों की होड़ भी हमारे वातावरण में तापमान में वृद्धि कर रही है। भौतिक विकास के नाम समाज प्राकृतिक संसाधनों का नाश कर रहा है। एक सामान्य नागरिक के रूप में हम आत्ममंथन करें कि गर्मी के आने पर हम हाय-हाय तो करने लगते हैं, लेकिन कभी हमने विचार किया कि हम इस स्थिति को दूर करने के लिये क्या योगदान देते हैं? क्या हम पौधा-रोपण की ईमानदार कोशिश करते हैं? हम जल के दुरुपयोग को रोकने का प्रयास करते हैं? क्या वर्षा जल सहेजने का प्रयास करते हैं ताकि तापमान कम करने व भूगर्भीय जल के संरक्षण में मदद मिले?

हकीकत यह है कि छतीय वर्षा जल और जलस्त्रोतों में वर्षा काल का बहता जल हम, समाज और सरकारी तंत्र बचाने संरक्षित करने के प्रति उदासीन हैं। इन हालातों में हमें बढ़ते तापमान के साथ जीना सीखना होगा। गर्मी को लेकर हायतौबा करने से गर्मी और अधिक लगती है। साथ ही गंभीरता से प्रयास भी करना होंगे। अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त, वॉटरमैन डॉ राजेंद्र सिंह ने गत दिनों मंदसौर में चर्चा में जानकारी दी कि मालवा - निमाड़ - महाकौशल - बुंदेलखंड में अभी भी ज्यादा नुकसान नहीं है और अलार्मिंग स्थिति बनती जारही है। बड़ा हिस्सा डार्क झोन, ग्रे झोन में पहुंच रहा है। सम्मिलित प्रयास से बदलाव हो सकता है, पर यह एक दूसरे पर जिम्मेदारी डालने से होने वाला नहीं है। हमारे पुरखों ने और परंपराओं ने मौसम अनुकूल खानपान, परंपरागत पेय-पदार्थों के सेवन तथा मौसम अनुकूल जीवन शैली का ऐसा ज्ञान दिया, जो हमें मौसम के चरम में सुरक्षित रख सकता है। पर आधुनिकता की दौड़ और होड़ में हमें वे व्यवस्था पुरातन पंथी लगती है? अब तो रासायनिक उर्वरकों से बने भोजन खाद्यान्न व अशुद्ध सब्जियां, दूध व उससे बने उत्पादों के उपभोग से हमारी रोग-प्रतिरोधक क्षमता घटी है।

कोरोना में घटी इम्युनिटी से बड़ा वर्ग अबतक उबर नहीं पाया है। अधेड़ और युवाओं में असमय हार्ट अटैक के मामले बड़ी संख्या में सामने आये हैं। हमारे जीवन में लगातार घटते श्रम ने भी जीवनी-शक्ति को कम ही किया है। एक व्यक्ति के रूप में हम बहुत कुछ ऐसा कर सकते हैं जिससे तपिश से खुद व समाज को सुरक्षित कर सकते हैं। हम अपने आंगन-छतों में हरियाली उगाकर घर का तापमान अनुकूल कर सकते हैं। साथ ही प्रकृति में विचरण करने वाले पक्षियों व जीव-जंतुओं को भी गर्मी से बचाने के लिये भी प्रयास करने चाहिए। यह गर्मी आने वाले समय में और बढ़ सकती है। सरकार व समाज मिलकर इसका मुकाबला कर सकते हैं।

इस उम्मीद के साथ कि समन्वित और संयुक्त प्रयासों से घर आंगन, खेत खलिहान हरा भरा होगा, वर्तमान और आनेवाली पीढ़ी को स्वच्छ - स्वस्थ और संतुलित पर्यावरण सौंपेंगे।

फिल्म चर्चा- 'त्वमेव सर्वम्'

पिता के सपनों, संघर्षों और पुत्र के समर्पण की संवेदनशील कथा

– सुदीप शुक्ल

पिछले कुछ समय में हिन्दी सिनेमा ने बायोपिक पर बेहतरीन काम किया है। इससे दर्शकों को न सिर्फ सार्थक सिनेमा देखने मिला बल्कि फिल्मकार ऐसे व्यक्तियों के जीवन की तस्वीरों के कई अनछुए पहलू भी सामने लाने में सफल रहे हैं जो लोगों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं। हाल ही में ओटीटी प्लेटफार्म जी सिनेमा पर प्रदर्शित 'त्वमेव सर्वम्' भी ऐसी ही एक बायोपिक है। यह लघु फिल्म गांव में रहने वाले लघु-

सीमान्त किसान पिता मूलचंद रजक के सपनों और संघर्षा के प्रतिफल में पुत्र डॉ. जीवन एस. रजक की सफलता की करुण कथा को स्क्रीन पर साकार कर पाने में समर्थ रही है। मध्यप्रदेश के संयुक्त कलेक्टर डॉ. जीवन एस. रजक के जीवनवृत्त पर आधारित 32 मिनट की इस शार्ट फिल्म में पिता मूलचंद के किरदार को अभिनेता संजय मिश्रा ने प्रभावी ढंग से निभाया है।

पिता-पुत्र संबंधों में हिन्दी सिनेमा ने कई महत्वपूर्ण फिल्में दी हैं। इनमें श्वेत-श्याम के शुरुआती समय से लेकर समांतर सिनेमा के दौर और मनोरंजन सिनेमा में इस रिश्ते के अलग-अलग रूपों की कहानियां पर्दे पर आती रही हैं। 'त्वमेव सर्वम्' भी इसी श्रंखला की एक लघु फिल्म है। लघु-सीमांत किसान श्री मूलचंद रजक अपने गांव में परिवार के साथ गुजर-बसर करते हैं। पढ़ाई-लिखाई से उनका दूर का नाता भी नहीं है लेकिन वे चेतना से भरे हुए मेहनती और धुन के पक्के व्यक्ति हैं। अभावों और तंगहाली में जैसे-तैसे गुजर-बसर कर रहे मूलचंद रजक को अपने बीमार बेटे जीवन को अस्पताल ले जाने पर ये एहसास होता है कि वही आदमी मजबूत आदमी है जिसके नाम के आगे 'टर' लगा हो। 'टर' यानी डॉक्टर या कलेक्टर। इस घटना से पिता-पुत्र की जिंदगी में एक महत्व पूर्ण मोड़ आ जाता है, जब अस्पताल से लौटते पिता की आंखों में यह सपना पलता है कि अब बेटे जीवन को पढ़ा-लिखा कर डॉक्टर या कलेक्टर बनाना है।

पिता के सपनों को पूरा करने पुत्र खुद को किताबों और स्कूल में झोंक देता है। वहीं पिता के हाथों की कठोर मेहनत और पैरों का खुरदुरापन बढ़ता जाता है। पुत्र जीवन अपनी प्रतिभा के साथ बिना किसी कोचिंग और ट्यूशन के एमबीबीएस की प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त कर मेडीकल कॉलेज रीवा में प्रवेश लेता है लेकिन कुछ समय बाद उसे परिवार पर आए इस बोझ का एहसास होते ही वह एमबीबीएस की पढ़ाई छोड़ने का फैसला लेता है। पिता उसके इस निर्णय में भी मजबूती से साथ खड़े होते हैं। फिर एक नई शुरुआत होती है और जीवन राज्य सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू करते हैं। इसके बाद जीवन एक के बाद एक प्रशासनिक सेवा परीक्षाओं में सफल रहते हैं लेकिन वे अंत में चुनते हैं डिप्टी कलेक्टर की उस नौकरी को जिसका सपना पिता मूलचंद की आंखों ने बुना था।

फिल्म में कई महत्वपूर्ण दृश्यों को निर्देशक ने बड़ी कुशलता और पूरी संवेदनशीलता के साथ साकार किया है, जैसे पुत्र द्वारा किताबों के लिए रुपए मंगाए जाने पर पिता और परिवार का दूसरे किसान की फसल काटकर पैसा जुटाना, जगह-जगह से पैबंद लगे पिता के जूते, पिता के कठोर होते पैर और फटती एड़ियां, केवल टाइटल से जीवन की सभी सफलताओं को दिखा देने का कमाल वे सफलता के साथ कर सके हैं। पूरी फिल्म् बहुत साधारण तरीके से रची गई है। ग्राम जीवन की पूरी झलक और महक इसे खास बनाती है। जीवन का किरदार अभिनेता विक्रम सिंह ने निभाया है। फिल्मो में नारी पात्र का प्रभावी न होना अखरता है।

एक सकारात्मक फिल्म के रूप में 'त्वमेव सर्वम्' यह संदेश देने में सफल रही है कि वास्तव में पुत्र की सफलता पिता के संघर्षो का प्रतिफल भी होती है। फिल्म में दोनों के संघर्ष और सफलता को प्रभावी ढंग से सामने लाने का प्रयास निर्देशक और पूरी कास्ट ने किया है। वर्तमान में भोपाल में रह रहे डॉ. जीवन एस. रजक राज्य प्रशासनिक सेवा के संयुक्त कलेक्टर हैं। दर्शन, धर्म-अध्यात्म, विज्ञान और सामाजिक विषयों के अध्येता हैं। इस सबके साथ ही वे एक संवेदनशील और श्रेष्ठ व्यक्तित्व हैं।

डाक्यूड्रामा से हटकर है ,वेबसिरीज़ - ' रणनीति '

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

किसी भी पूर्ण अथवा आंशिक युद्ध की सच्ची घटना पर फिल्म अथवा वेबसिरीज़ बनाना हमेशा जोखिम भरा होता है। अपवादस्वरूप ही कोई चेतन आनन्द - ' हकीकत ' जैसी अर्थपूर्ण फिल्म बना पाता है।इतनी कठिन राह के बाद भी बार्डर से लेकर उरी और कारगिल तक और ओटीटी प्लेटफार्म पर तेजस,आपरेशन वैलेंटाइन और फाइटर जैसी युद्ध पर आधारित वेबसिरीज़ बन रही है। इसी श्रृँखला की सबसे ताजा कड़ी है जियो सिनेमा पर प्रदर्शित नौ एपीसोड की वेबसिरीज -' रणनीति,बालाकोट एण्ड बियान्ड '। वेबसिरीज़ की कहानी एक रॉ एजेंट और उसकी टीम के इर्द-गिर्द घूमती है। पुलवामा हमले के बाद यह टीम पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई करती है। एजेंट्स की यह टीम पाकिस्तान के कब्जे से भारतीय पायलट को वापस लाने के प्रयास में जुटी है, वहीं हाइब्रिड युद्ध और वैश्विक मीडिया में

पाकिस्तान के झूठ को भी बेनकाब करने की तैयारी भी कर रही होती है। यह वेबसिरीज़ देशभक्ति,राजनीति और नये दौर के युद्ध की दिलचस्प कहानी है ?।

राजनीति हो या युद्ध, यह सब एक खास धारणा पर आधारित होते हैं। 'रणनीति' इस विचार को परदे पर उतारती है। यह वेबसिरीज़ खतरनाक पुलवामा हमले की जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के बालाकोट पर हुए हवाई हमले की जटिलताओं का व्यौरा भी देती है।देश के रक्षा अभियानों पर अगर आप सतही जानकारी भी रखते हैं, तो इस वेब सिरीज की काल्पनिक कहानी और सच्ची घटनाओं के बीच आपको काफी समानताएँ दिख जायेंगी। हम सभी ने इससे पहले भी कई बार परदे पर इस एयर स्ट्राइक की कहानी देखी है। लेकिन वो एक चीज, जो इस सिरीज को सबसे अलग बनाती है, वो है हवाई हमले के दौरान परदे के पीछे की कहानी क्योंकि अब तक इस पर बनी फिल्मों या सिरीज में इस पर बहुत ज्यादा फोकस नहीं किया गया था। इस एक खूबी के कारण ही यह वेबसिरीज़ महज़ एक डाक्यूड्रामा से हटकर है। इस सिरीज की पटकथा को बड़ी चतुराई से लिखा गया है। सीरीज की कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, एक के बाद एक नई परतें खुलती जाती हैं।इसमें एक रोमांच भी है, जो आपको स्क्रीन से नजरें हटाने का मौका नहीं देता है। कहानी का ट्रीटमेंट ऐसा है, जो आपकी उत्सकुता बनाए रखता है कि आखिर आगे क्या होने वाला है।

इस एक वेबसिरीज़ में जिस एक शख्स ने निराश किया है, वह हैं अभिनेता आशुतोष राणा। यशराज फिल्म्स स्पाई यूनिवर्स ने उन्हें अदाकारी का अगला अध्याय लिखने का मौका दिया। लेकिन, वहाँ भी अब अनिल कपूर की आमद हो जाने की खबरें हैं। सो, आशुतोष फिर से स्याह किरदारों के चोले में हैं। बस दिक्कत यह है कि उनकी खुद सोशल मीडिया पर बनाई अपनी इमेज इस चरित्र को यहाँ खिलने ही नहीं देती। आशीष विद्यार्थी का अभिनय सधा सधाया है, उनसे ज्यादा कुछ प्रयोग की उम्मीद भी नहीं रहती। प्रसन्ना जरूर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। उनसे आने वाले समय में बेहतर चरित्रों की उम्मीद हिंदी पट्टी के दर्शकों को बनी रहेगी।

वेबसिरीज का एक और मुख्य आकर्षण उसके संवाद है। एक दृष्य में मनीषा के रूप में लारा दत्ता कहती हैं, 'चीखकर बताए हुए सच से ज्यादा भरोसा, कान में कहे हुए झूठ पर होता है।' हालांकि, सिरीज देखते हुए कई मौकों पर वो पल भी आते हैं, जहाँ आपको पहले से एहसास हो जाता है कि आगे क्या होने वाला है। इसे समीक्षक ही नहीं दर्शक भी एक खामी मानते हैं। सिरीज में स्पेशल इफेक्ट्स टीम का काम देखकर लगता है कि उन्होंने 'तेजस', 'फाइटर' और 'ऑपरेशन वैलेंटाइन' के लिए बने फाइटर जेट्स के कंप्यूटरजनित सीन हू ब हू उठा लिए हैं। सिरीज़ का बैकग्राउंड म्यूजिक स्टॉक कलेक्शन से बना दिखता है। कुछ नोटिस करने लायक इस सिरीज में है तो वह है इसके निर्माताओं के नामों की अंग्रेजी की वर्तनी,जिस पर ध्यान दिया जाता तो अच्छा होता।इन खूबियों और खामियों के बीच भी दमदार अभिनय,बेहतरीन पटकथा और कहानी के रोमांच के कारण यह सिरीज एक देखने लायक थ्रिलर है।

निर्देशक संतोषसिंह ने बड़ी कुशलता से हर कहानी के हर पहलू के साथ न्याय किया है, फिर चाहे वह एक्शन हो, राजनीतिक ड्रामा हो या फिर जासूसी थ्रिलर। सिरीज़ में एयर स्ट्राइक को उतने ही रोमांचकारी अंदाज में फिल्माया गया है, जितने रोमांच से भारतीय जासूसों को पाकिस्तानी आतंकवादियों को मात देते दिखाया गया है। यहाँ हमें हाइब्रिड युद्ध का नया रूप देखने को मिलता है, जहां इंटरनेशनल न्यूज और सोशल मीडिया किसी देश को बना या बिगाड़ सकते हैं यह दिखाया गया है। संतोष सिंह ने हर एक ट्रैक को दूसरे ट्रैक के साथ बेहतरीन ढंग से संजोया है।

हरदौली बांध एंव ट्रांसफार्मर से हो रही है बिजली पानी की चोरी

- झूलते लटकते तारों से कभी भी हो सकती है दुर्घटना
- नगर पालिका को लग रहा है बिजली बिल का चूना

बैतूल/मुलताई- मुलताई नगर की पेयजल समस्या के स्थाई निदान के लिए बनाई गई हरदौली जलावर्धन योजना के पानी , और बांध पर लगाई गई डीपी से बिजली चोरी का सनसनीखेज मामला सामने आया है। जहां हरदौली बांध इंटेक वेल के पास तीन से चार स्थानों पर बड़ी-बड़ी मोटर लगाकर के पाइप लाइनों के माध्यम से हरदौली बांध का पानी अपने खेतों में ले जाया जा रहा है। चौका देने वाला तथ्य यह है कि इन पंपों के लिए बिजली भी नगर पालिका की डीपी और बिजली घर से चोरी करके ली जा रही है। जो की हरदौली जल आवर्धन योजना के लिए एक गंभीर मामला है इस कृत से ना सिर्फ योजना के लिए गंभीर संकट खड़ा हो सकता है बल्कि इससे नगर पालिका को बिजली बिल की राशि का चुना भी लग रहा है। क्या ठेकेदार की मिली भगत से हो रही है पानी और बिजली की चोरी हरदौली जल आवर्धन योजना के पेयजल घटक के ठेकेदार द्वारा अब तक कार्य पूर्ण कर संपूर्ण योजना का दायित्व नगर पालिका को सौप दिया जाना चाहिए था। किंतु ठेकेदार के कार्य की समय सीमा बढ़ती गई योजना अभी अधर में है। नगर पालिका के सूत्र बताते हैं कि वर्तमान समय में योजना की देखरेख का आधिपत्य ठेकेदार के पास है। और जिस प्रकार से इंटेक वेल एवं नगर पालिका की विद्युत डीपी से सरे आम तार जोड़ कर विद्युत चोरी हो रही है ठेकेदार के मिली भगत के संभव नहीं है किंतु बिजली चोरी के परिणाम कितने घातक हो सकते हैं नगर पालिका ने यह देखने की आवश्यकता कभी नहीं समझी। बांध, इंटेकवेल के पास झूलते बिजली के तारो से हो सकता है हादसा यूं तो हरदौली बांध पर कई मोटर लगी है किंतु इंटेकवेल और बिजली घर के पास तीन से चार मोटर सरे आम लगी है और इतनी ही मोटर के तार हवा में झूलते सरेआम देखे जा सकते हैं में बिजली के तारों को बास एंव बलियों के सहारे खड़ा करके नगर पालिका के बिजली घर पर लगी डीपी से जोड़ा गया है। जानकार बताते है कि हवा धुन और बारिश के चलते या कभी भी गंभीर हादसा हो सकता है वहीं दूसरी ओर अगर लाइन कनेक्शन के लिए नगर पालिका की डीपी से की गई छेड़छाड़ के चलते अगर यह डीपी खराब हो जाती है तो संपूर्ण नगर की पेयजल व्यवस्था चौपट हो सकती है। चौकाने वाला तथ्य यह है कि नगर पालिका का ठेकेदार जिसकी जवाब देखी प्रोजेक्ट की देखरेख करना है ने इस मामले को कभी गंभीरता से नहीं लिया और ना ही कभी नगरपालिका ने हीं इस दिशा में कोई ठोस कार्रवाई की है।

इनका कहना...

योजना अभी नगर पालिका के सपुरत नहीं हुई है। इसलिए जवाब देही ठेकेदार की है मामले की जांच करने के बाद ठेकेदार और किसानों को नोटिस जारी कर उचित कार्रवाई करेंगे।

आर के ईवनाती, नगर पालिका अधिकारी मुलताई

देश के विभिन्न स्थानों से पधारे धर्माचार्यों को किया सम्मानित

- ब्रह्मलीन गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल के 76 वें जन्मदिवस पर श्री शंभू दरबार में संत समागम

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। ब्रह्मलीन गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल के 76 वें जन्मदिन दिवस पर पलाश परिसर स्थितश्री शंभू दरबार में जन्मोत्सव के अवसर पर संत समागम का आयोजन किया गया। इस संत समागम के अवसर पर देश के विख्यात धर्माचार्य जगतगुरु स्वामी रामदिनेशार्च महाराज अयोध्या उत्तर प्रदेश, जैन संत बाल ब्रह्मचारी बसंत महाराज, ब्रह्मचारी कमलानंद महाराज विहार, महामंडलेश्वर गुरू दास महाराज बगलेश्वर विहार, मध्य प्रदेश महामंडलेश्वर स्वामी सदाशिव नित्यानंद गिरि महाराज हरिद्वार, संत श्री 108 मदन मोहन दास महाराज रेवा बनखेड़ी, स्वामी ईसानानंद सरस्वती शंकर विवेकानंद सन्यास आश्रम, आचार्य शांति श्रेया अयोध्या ,आचार्य पंडित सीताराम पांडे श्री हरि शरणम पिपरिया, रघुनाथ दास रामायणी , बावड़ी वाले मंदिर महंत हरिकिशन दास जी,ज्ञानी सुरजीत सिंह,आदि ने अपने प्रसंगों से उपस्थित श्रद्धालुओं भक्तों को आत्म विभोर कर दिया। वहीं आचार्य जनों ने ब्रह्मलीन गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल महाराज के यज्ञों के अलावा धर्म-कर्म पर विस्तृत सारगर्भित उद्बोधन दिए। वहीं समस्त धर्माचार्यो ने कहा कि ब्रह्मलीन गुरुदेव महाराज के सुपुत्र पंडित प्रकाश मुदगल एवं मधुसूदन मुद्गल उनकी धर्म-कर्म के प्रति आस्था की परम्परा बनाएं रखेंगे।हम सभी उसको हृदय से आशीष प्रदान करते हैं।इस अवसर पर नगर ही नहीं अन्य नगरों भक्त महिलाओं एवं नागरिकों की भारी उपस्थिति रही। श्री शंभू दरबार के वकील अखिलेश मालवीय ने सुबह सवेरे संवाददाता को बताया कि देश विभिन्न स्थानों से पधारे समस्त धर्माचार्यो को शाल-श्रीफल स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री शंभू दरबार यूट्यूब चेनल पर कार्यक्रम निरंतर टेलीकास्ट होता रहा।

हेड कांस्टेबल ने की आत्महत्या,खेत में पेड़ से लटका मिला, पुलिस कर रही जांच

बैतूल। पुलिस लाइन में पदस्थ एक पुलिस आरक्षक ने अपने ही खेत में पेड़ से फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली मौके पर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी पन्हुचे और शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा है। घटना बैतूल बाजार थाना क्षेत्र के ग्राम रतन पुर निवासी छत्रु इवने उम्र 56 वर्ष ने आज सुबह चार से पांच बजे के बीच अपने खेत में जाकर एक पेड़ से लटककर कर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली । घटना को सुबह मृतक के भाई ने देखा की उसका भाई का शव पेड़ से लटका हुआ है जिसके बाद उसने अपने घर परिजनों को बताया स जिसके बाद पूरे गांव में यह खबर फेल गई और लोग घटना स्थल पर पंहुचने लगे थे। बताया जा रहा है की मृतक प्रधान आरक्षक छत्रु पुलिस लाइन में ड्यूटी करता था जोकि बीमार रहता था इसी वजह से उसने बीमारी से तंग आकर आत्महत्या कर ली आरक्षक की मौत की सूचना मिलते ही एडिशनल एसपी कमला जोशी और बैतूल बाजार पुलिस मौके पर पन्हुचे और जांच शुरू की मृतक आरक्षक के पास से एक सुसाइट नोट भी मिला है । पुलिस सभी पहलुओं पर जांच कर रही है मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल पन्हुचाया गया है।

इनका कहना

पुलिस लाइन में पदस्थ प्रधान आरक्षक छत्रु सिंह इवने ने अपने खेत रतनपुर में पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है मृतक के पास से सुसाइट नोट मिला है जोकि मार्ग जांच में लेकर जांच शुरू की गई है ।

एडिशनल एसपी कमला जोशी बैतूल

घर की छत पर सोता रहा परिवार, चोरों ने घर का ताला तोड़ चार लाख के जेवर ले हुए फरार

बैतूल। घर की छत पर सोता रहा सैनिक का परिवार और रात में चोरों ने घर का ताला तोड़कर लाखों रुपए के जेवरों पर हाथ साफ कर दिया स सुबह घर वाले छत से नीचे आए तो घर का और आलमारी का ताला टूटा देख होश उड़ गए चोरी की सूचना तत्काल पुलिस को दी। घटना बैतूल बाजार थाना क्षेत्र के ग्राम आरूल की है जंहा बीती रात मदन सरियाम और उसका परिवार बिजली नहीं होने के कारण खाना खाने के बाद रात में घर में ताला लगाकर घर के ऊपर छत पर सोने चला गया जब सुबह जब देखा तो घर का ताला टूटा हुआ था स पीड़ित मनीषा

सरयाम ने बताया की रात में बिजली नहीं थी और गर्मी बहुत हो रही थी इसलिए घर में ताला लगाकर छत के ऊपर सोने चले गए थे इसी दौर रात में अज्ञात चोरों ने घर का ताला तोड़कर चोरी की जिसमे करीब चार लाख रुपए कीमत के सोने चांदी के जेवर चोरी कर ले गए। पीड़ित मदन सरियम ने बताया की घर की छत में पूरा परिवार गहरी नींद में सो रहा था बिजली नहीं होने की वजह से घर में अंधेरा था इसी दौरान चोरों ने चोरी की घटना की अंजाम दिया गहरी नींद होने के कारण घर में चोरी होने की जरा भी आहट नही हुई सुबह जब देखा तो घर का ताला टूटा था।

देवऋषि नारद जयंती पर परिचर्चा का आयोजन हुआ

देवास। विश्व संवाद केंद्र मालवा और प्रेस क्लब देवास के सामूहिक प्रयासों से सृष्टि के पहले पत्रकार नारद जी की जयंती पर जिले के पत्रकारों के लिए परिचर्चा आयोजित की गई। आयोजन में विशेष रूप से मुख्य वक्ता के रूप के उज्जैन से आए वरिष्ठ पत्रकार योगेश कुल्मी उपस्थित रहे। जिनके साथ प्रेस क्लब अध्यक्ष अतुल बागलीकर और शिक्षा महाविद्यालय देवास के पूर्व प्राचार्य एवं शिक्षाविद विजय श्रीवास्तव ने मंच साझा किया। कार्यक्रम का आरंभ माँ सरस्वती व देवऋषि नादरजी के चित्र पर माल्यार्पण से किया गया। तत्पश्चात अतिथि परिचय अरविंद त्रिवेदी ने दिया तथा मंचासीन अतिथियों का स्वागत मोहन वर्मा, आमिताभ शुक्ला, शेखर कौशल ने किया। वहीं कार्यक्रम की भूमिका पर विश्व संवाद केंद्र मालवा के अमित राव पवार ने प्रकाश डाला। परिचर्चा के दौरान मुख्य वक्ता योगेश कुल्मी ने देवऋषि नारद जी द्वारा की गई सूचनाओं के आदान प्रदान की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिस प्रकार नारद जी सूचनाओं का आदान प्रदान करते थे, उसी प्रकार सूचनाओं का आदान प्रदान लोक कल्याण का कारक होना चाहिए। नारद जी का काम जो हम कर रहे है उससे स्वयं के प्रति पॉजिटिव फिलिंग आती हैं। श्री कुल्मी जी ने विशेषकर अपने संवाद में आंचलिक पत्रकारों की व्यथा पर जोर दिया। हमारे कामों में यह बहुत अच्छी बात है कि हम नारद जी का कार्य कर रहे हैं किंतु एक महत्वपूर्ण बात मैं आपको बताना चाहूंगा की नारद जी ने अपने कार्य के दौरान अपना मान सम्मान बनाए रखा, हमें भी अपना मान सम्मान और गरिमा कार्य के दौरान बनाए रखना है। संविधान द्वारा बनाए गए चार स्तंभों में चौथा स्तंभ पत्रकारिता है। कोविड जैसी आपदा के समय मे भी पत्रकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। श्री कुल्मी ने पत्रकारों की दो प्रमुख समस्याओं स्वास्थ्य और मान सम्मान की बात की। उन्होंने कहा कि अन्य पेशों में काम करने वालो की सुरक्षा के लिए जिस तरह कानून बनाए गए है वैसे ही पत्रकारों की सुरक्षा के लिए भी कानून बनाए। साथ ही पत्रकार अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करने के दौरान अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आज अधिकतर पत्रकार शुगर और ब्लड प्रेशर जैसी गंभीर बीमारियों से ग्रसित हैं। मंच संचालन प्रेस क्लब सचिव चेतन राठौड़ ने किया।

अखिल भारतीय युवक-युवती परिचय सम्मेलन आज देवास में

देवास। गुर्जर गोड ब्राह्मण समाज के अविवाहित युवा युवतियो का परिचय सम्मेलन माँ चामुण्डा की नगरी देवास में 26 मई, रविवार को भोपाल रोड स्थित मिलाप गार्डन में आयोजित होने जा रहा है। सम्मेलन का शुभारंभ प्रातः 9.30 पर समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्यप्रकाश जोशी एवं प्रांतीय अध्यक्ष राजेश त्रिवेदी दीप प्रज्वलित कर महर्षि गौतम की पूजा-अर्चना कर करेंगे। अध्यक्षता अखिल भारतीय महिला महासभा की संरक्षक, पूर्व राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं उज्जैन नगर निगम की पार्षद माया त्रिवेदी करेंगी।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मंत्री दीपक जोशी, सर्व ब्राह्मण समाज अध्यक्ष दिनेश मिश्रा, अभा महा सभा के महासचिव एवं प्रदेश प्रभारी जितेंद्र गौतम, अभा महिला महासभा की वरिष्ठ उपाध्यक्ष डा. रानी व्यास, अखिल भारतीय गुर्जर गौड ब्राह्मण युवक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश खटोड़, राष्ट्रीय महामंत्री ललित उपाध्याय, गुजरात प्रांतीय अध्यक्ष दीपक शर्मा, आसाम प्रांतीय अध्यक्ष मनोज गोतम, तमिल नाडु प्रांत अध्यक्ष सत्य प्रकाश पंचारिया, मप्र प्रांतीय महिला सभा की अध्यक्ष भारती तिवारी, राजस्थान प्रांतीय महिला अध्यक्ष ममता शर्मा, युवक संघ अध्यक्ष शिवम राजपुरोहित, महासभा राष्ट्रीय प्रवक्ता नरेश शर्मा, साथ प्रदेश के महामंत्री सुबोध शर्मा, एवम राष्ट्रीय सचिव प्रदीप तिवारी रहेंगे। परिचय सम्मेलन के संरक्षक एवं सूत्रधार अखिल भारतीय महासभा के राष्ट्रीय महासचिव प्रमोद व्यास ने बताया की इस परिचय सम्मेलन में लगभग 930 प्रविष्ठि, साथ ही विधवा विधुर, तलाक शुदा, विकलांग एवम नेत्रहीन प्रविष्ठि भी प्राप्त हुई है। साथ ही इस अवसर पर समाज के 20 समाजसेवियों का भी सम्मान किया जायेगा। जिन्होंने समाज और विभिन्न क्षेत्र में अपने नाम को गौरवान्वित किया है। देवास जिला सभा अध्यक्ष सुनील शर्मा, कार्याध्यक्ष कमलेश शर्मा, उप संयोजक रवि व्यास, सतीश व्यास एवं सह संयोजक संजय शर्मा, रोहित प्रदीप मंडलोई, राजेश जोशी, महेश शर्मा, आशीष शर्मा, दुर्गा शंकर शर्मा, महेश व्यास, रवि शर्मा, जिला महिला अध्यक्ष चंचल व्यास, प्रांतीय महिला उपाध्यक्ष कविता शर्मा, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अंकित शर्मा, जिला युवक संघ अध्यक्ष लाला जोशी एवं बालकृष्ण शर्मा, संजय तिवारी, उज्वल तिवारी ने आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी स्व जाति बंधुओं से अपील की है। साथ ही इस आयोजन में आसाम, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, हरियाणा तथा मध्यप्रदेश के स्वजाति बंधु उपस्थित होंगे।

पत्रकारिता की विश्वसनीयता और उपयोगिता को कायम रखना ही नारद जयंती की प्रासंगिकता है: राजेश शर्मा

ऐतिहासिक धारानगरी में देवऋषि नारद जयंती मनाई गई, आयोजन में पत्रकार जगत- प्रबुद्धजन हुए शामिल

धार। विश्व संवाद केंद्र मालवा द्वारा ऐतिहासिक धारानगरी में देवऋषि नारद जयंती समारोह का आयोजन प्रेस क्लब धार के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार , लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर राजेश शर्मा ने की । कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ अनुराधा शर्मा ,सहायक प्राध्यापक , अल्टीअस इंस्टीट्यूट आफ यूनिवर्सल स्टडीज , इंदौर रही । कार्यक्रम का शुभारंभ आद्य संवाददाता देवऋषि नारद जी के चित्र पर राजेश शर्मा, डॉ अनुराधा शर्मा ने माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित कर किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में राजेश शर्मा ने कहा कि करीब 200 वर्षो पूर्व हिन्दी जगत का पहला समाचार पत्र उदंड मार्तंड नारद जी की जयंती से प्रकाशित होना प्रारंभ हुई था। जो आज की आधुनिक पत्रकारिता में नारद जी के महत्व को दर्शाता हैं। वो दौर जब मीडिया अपने तेवर, अपनी धारदार शैली से पत्रकारिता जगत की सर्वमान्यता और सर्व स्वीकार्यता बरकरार रखे हुए थे, आज मीडिया बहुत बड़े संक्रमणकाल के दौर से गुजर रहा है....पत्रकारिता की विश्वसनीयता और उपयोगिता को कायम रखना ही नारद जयंती की प्रासंगिकता है।

देवर्षि नारद विविध कलाओं के साथ- साथ एक उत्कृष्ट पत्रकार थे जिनका तीनो लोकों में संवाद था- मुख्य वक्ता डॉ.अनुराधा शर्मा संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ.अनुराधा शर्मा ने कहा कि देवर्षि नारद विविध कलाओं के साथ- साथ एक उत्कृष्ट पत्रकार थे । जिनका तीनो लोको में संवाद था। देवऋषि का संवाद विलक्षण था और सकारात्मक पत्रकरिता के अनुरूप था। लेकिन 70 के दशक में देव ऋषि नारद की भूमिका को फिल्मों के माध्यम से विकृत करने का प्रयास किया गया। पिछले 8-10वर्षो मे इस प्रकार के आयोजनों से समाज के बीच नारद जी का फिर से मूल स्वरूप पुनर्स्थापित हुआ है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्वयं कहा है कि देवर्षियो में मैं नारद हूं। इससे पता चलता है कि नारद जी का स्थान सृष्टि में कितना ऊंचा है । आज हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि पत्रकारिता सकारात्मक सृजन का माध्यम बने । हमे इस बात को स्वीकार करना होगा कि देवर्षि एक आदर्श पत्रकार रहे हैं। हमे भी आज के समय में देवऋषि की तरह संवाद का तरीका अपनाना होगा। पत्रकारिता को धरातल पर रहकर करना होगा । मीडिया में कार्यरत पत्रकार बंधुओं को नारद जी से निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा और वस्तुनिष्ठा की सीख लेना चाहिए। वर्तमान पत्रकारिता के परिदृश्य में पत्रकार जगत के अग्रज अध्यक्ष देवऋषि नारद के आदर्श एवं नैतिक मूल्य हम सबके लिए प्रेरणादायी हैं। आयोजन में पत्रकार जगत- प्रबुद्धजन शामिल हुए।

सरस्वती शिशु मंदिर की प्रबंध समिति ने महर्षि नारद जयंती पर नगर के पत्रकारों को किया सम्मानित

सुबह सवेरे सोहागपुर। सरस्वती शिशु मंदिर की नेताजी सुभाष चन्द्र बोस शिक्षा समिति के तत्वावधान में महर्षि नारद जयंती के अवसर पर विधालय परिसर में पत्रकारों को सम्मानित किया। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्राचीन बावड़ी वाले मंदिर के महंत हरिकिशन दास,नेताजी सुभाष चन्द्र बोस शिक्षा समिति के अध्यक्ष कन्नूलाल अग्रवाल वरिष्ठ पत्रकार हीरालाल गोलानी, समिति उपाध्यक्ष अभिषेक जैन, कोषाध्यक्ष संजीव दुबे, व्यवस्थापक कृष्णा पालीवाल के आतिथ्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य अशोक कुमार दुबे विशेष रूप से उपस्थित थे।इस अवसर पर पत्रकार वरिष्ठ हीरालाल गोलानी, अमित बिल्लौरे ,अरविंद चौरसिया, राजेश शुक्ला, सतीश चौरसिया, पवनसिंह चौहान,संदीप चतुर्वेदी,रुपेश मेहरा आदि ने कार्यक्रम को संबोधित किया। इसी अवसर पर प्राचार्य अशोक दुबे ने सरस्वती शिशु मंदिर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अलावा सरस्वती शिशु मंदिर सोहागपुर विधालय पर सारगर्भित उद्बोधन

देते अटल लेब, सोहागपुर विधालय में केवल सरस्वती शिशु मंदिर में छोटे भैया बहनों के लिए तरणताल, के अलावा व्यावसायिक शिक्षा पर अपने विचार रखे।आपने अंत में कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर में अंग्रेजी माध्यम की भी कक्षाओं को प्रारंभ किया जा रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बावड़ी वाला मंदिर के महंत हरिकिशन दास ने नगर के पत्रकारों की सराहना की। वहीं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस शिक्षा समिति अध्यक्ष कन्नूलाल अग्रवाल ने महर्षि नारद के प्रसंगों पर सारगर्भित उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन जीवन जी दुबे ने किया। आभार नेताजी सुभाष चन्द्र बोस शिक्षा समिति कोषाध्यक्ष संजीव दुबे ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में आचार्य संतोष चौरसिया एवं संतोष देवलिया ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य ममता यादव, आचार्य, दीदियां आदि उपस्थित थे।

इनका हुआ सम्मान

हीरालाल गोलानी, अमित बिल्लौरे, अरविंद चौरसिया, राजेश शुक्ला, सतीश चौरसिया, पवनसिंह चौहान, संदीप चतुर्वेदी , कपिल मालवीय,श्वेतल दुबे,रीतेश साहू, रूपेश मेहरा, देवेंद्र कुशवाहा,प्रदीप देवलिया आदि पत्रकारों का शाल-श्रीफल, स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया।

वंदना, पूजा अर्चना

इसके पूर्व ओमकार, मां सरस्वती,भारत माता की अतिथियों ने पूजा अर्चना करके दीप प्रज्वलित किया। वहीं महर्षि नारद के चित्र पर उपस्थित जनों ने पुष्प अर्पित किए गए।

समर कैंप के माध्यम से निखर रही है खेल प्रतिभाएँ

सीएम राइज विद्यालय में प्रारंभ है 13 दिवसीय समर कोर्स

बैतूल/मुलताई - खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा शासकीय सीएम राइज विद्यालय मुलताई में समर कैंप का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें छात्र-छात्राएं विभिन्न खेलो में सहभागिता निभाकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। समर कैंप खेल प्रशिक्षण में ग्रामीण खेल,योग, चित्रकला, के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्र के खेल एवं तकनीकी कौशल का अभ्यास रोज कराया जा रहा है। सी एम् राइज स्कूल के प्रभारी प्राचार्य संदीप गणेशे के मार्गदर्शन में शासन के निर्देशानुसार 13 दिवसीय समर कोर्स के केम्प का आयोजन व्यायाम निदेशक महेश खत्री, उच्च माध्यमिक शिक्षक वैभव वर्मा, प्राथमिक शिक्षक मोहित श्रीवास्तव, के नेतृत्व में किया जा रहा है।

ब्लॉकबस्टर %स्त्री% के बाद प्रोड्यूसर दिनेश विजान की मैडॉक फिल्म्स अपने इनोवेटिव

भारत की पहली सीजीआई फिल्म

प्रोजेक्ट %मुंज्या% के साथ एक बार फिर अपने दर्शकों को लुभाने के लिए तैयार है. यह भारत की पहली सीजीआई (कंप्यूटर-जनरेटेड इमेजरी) फिल्म है. इस फिल्म में हीरो सीजीआई से बनाया गया है. %मुंज्या% को खास तौर पर बच्चों के लिए एक रोमांचक सिनेमा अनुभव कराने के लिए बनाया है. %मुंज्या% का टीजर रिलीज हो चुका है. जिसमें %मुंज्या% की पहली झलक देखने को मिल रही है जो काफी दिलचस्पी जगा दी है, जिससे पता चलता है कि यह युवा दर्शकों को आकर्षित करेगा।

%मुंज्या% के टीजर ने हॉरर और कॉमेडी के अनूठे मिश्रण के साथ उत्सुकता बढ़ाता है, जिसमें %मुन्नी% को एक रहस्यमय किरदार के रूप में दिखाया गया है. यह फिल्म डर और हंसी दोनों का मिश्रण है. इस फिल्म का निर्देशक आदित्य सरपोतदार ने किया है. %मुंज्या% सीजीआई को प्रदर्शित करने वाली भारत की पहली फिल्म बन गई है. इस फिल्म का ट्रेलर 24 मई को रिलीज होगा. %मुंज्या% न केवल बात कर सकता है और चल-फिर सकता है, बल्कि दर्शकों के दिलों में डर पैदा करने में भी कामयाब होता है, जो इस शैली में एक अनूठा मोड़ जोड़ता है.

यह फिल्म अत्याधुनिक तकनीक के प्रति दिनेश विजन की प्रतिबद्धता को एक कदम आगे ले जाती है, यह पहली भारतीय फीचर फिल्म बन गई है, जिसमें पूरे रनटाइम में एक पूर्ण विकसित सीआईजी प्राणी है. ट्रेलर 24 मई को जारी किया जाएगा. शरवरी, मोना सिंह, अभय वर्मा और सत्यराज अभिनीत, आदित्य सरपोतदार द्वारा निर्देशित यह फिल्म %मुंज्या% के इर्द-गिर्द घूमती है, जो भारतीय विश्वास और सांस्कृतिक व्यवस्था की दुनिया से एक निहित मिथक है. %मुंज्या% 7 जून 2024 को बड़े पर्दे पर आने वाली है, इसलिए चीखने-चिल्लाने के लिए तैयार हो जाइए. दिनेश विजन प्रस्तुत करते हैं, आदित्य सरपोतदार द्वारा निर्देशित %मुंज्या% और दिनेश विजन और अमर कौशिक द्वारा निर्मित मैडॉक फिल्म्स प्रोडक्शन 7 जून 2024 को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी।

'सिंघम अगेन' में साउथ के एक्टर की एंट्री

अजय देवगन की फिल्म %सिंघम अगेन% साल 2024 की मच-अवेटेड मूवीज में से एक है। फिल्म %सिंघम अगेन% का बेसब्री से इंतजार हो रहा था। लेकिन, इस फिल्म को लेकर खबर है कि अब ये 15 अगस्त को रिलीज न होकर नवंबर में रिलीज होगी। फिल्म %सिंघम अगेन% की शूटिंग सेट से हाल ही में वीडियोज और फोटोज वायरल होने के बाद दर्शक एक्साइटेड हो गए थे। अब अजय देवगन की फिल्म से जुड़ा एक और अपडेट सामने आया। जिसने ज्यादा उत्साहित कर दिया। दरअसल, फिल्म %सिंघम अगेन% में एक साउथ एक्टर की एंट्री हो गई है।

फिल्म %सिंघम अगेन% लगातार चर्चा में बनी हुई है। इस फिल्म को लेकर आया लेटेस्ट अपडेट फैंस को एक्साइटमेंट डबल करने वाला है। सोशल मीडिया पर एक तस्वीर वायरल हो रही है जिसमें अजय देवगन तेलुगू स्टार अजय के साथ नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर के साथ बताया जा रहा है कि फिल्म %सिंघम अगेन% में अजय की एंट्री हो गई है और उन्हें महत्वपूर्ण किरदार के लिए कास्ट किया गया है। बताया जा रहा है कि अजय फिल्म %सिंघम अगेन% से बॉलीवुड डेब्यू करने वाले हैं।

संजय दत्त ने 'वेलकम टू द जंगल' छोड़ी

%वेलकम टू द जंगल% दिसंबर में रिलीज होने वाली है। %वेलकम% के तीसरे पार्ट %वेलकम टू द जंगल% का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है। ये फिल्म अक्षय कुमार, अनिल कपूर, सुनील शेट्टी, संजय दत्त, परेश रावल, रवीना टंडन, लारा दत्ता सहित कई बड़े स्टार्स साथ बनाई जा रही है। इस बीच फिल्म %वेलकम टू द जंगल% को लेकर बड़ी खबर आ रही है। मीडिया रिपोर्ट में बताया जा रहा है कि इस फिल्म से संजय दत्त ने किनारा कर लिया है। संजय दत्त के %वेलकम टू द जंगल% से बाहर होने के फैसले से झटका लगा है। फिल्म %वेलकम टू द जंगल% में अब संजय दत्त नजर नहीं आएंगे। संजय दत्त ने फिल्म से बाहर होने का फैसला किया। उन्होंने फिल्म %वेलकम टू द जंगल% में 15 दिन की शूटिंग भी कर ली थी। संजय दत्त को लग रहा है कि फिल्म की शूटिंग बिना प्लानिंग के हो रही है और स्क्रिप्ट में काफी बदलाव हुए है। इस वजह से उनके बाकी प्रोजेक्ट पर भी असर पड़ रहा है। संजय दत्त ने फिल्म को छोड़ने को लेकर सभी बातें अक्षय कुमार को बताई है।

गुस्से से तंग आ गए सलमान खान के पिता

मशहूर स्क्रीनराइटर और सलमान खान के पिता सलीम खान ने कई शानदार फिल्में लिखी हैं। सलीम खान अक्सर इंटरव्यू में अपनी फिल्मों से लेकर परिवार तक के बारे में बात करते हुए नजर आते हैं। उन्होंने अपने बच्चों से जुड़े कई राज खोले हैं। इतना ही नहीं, सलीम खान सलमान खान के विवाद पर भी बोलते हुए दिखे हैं। वहीं, अब सलीम खान का एक इंटरव्यू जमकर वायरल हो रहा है, जिसमें वह अपने सभी बच्चों के बारे में बात कर रहे हैं और उनकी सबसे खराब आदत का जिक्र करते दिखे हैं।

दरअसल, सलीम खान ने हाल ही में जूम को एक इंटरव्यू दिया है, जिसमें उन्होंने बच्चों की शराब पीने की आदत का जिक्र किया है। इस इंटरव्यू में सलीम खान से पूछा गया कि वह अपनी एक ऐसी क्वालिटी बताएं, जो वह अपने बच्चों में भी देखना चाहते हैं। इसका जवाब देते हुए सलमान खान के पिता ने कहा कि सब्र और गुस्सा

संभालना। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है गुस्सा बहुत अच्छा इमोशन है, लेकिन इसे सही जगह ही इस्तेमाल करना चाहिए। ये एक जेनेटिक दिक्कत होती है, जो बच्चों में भी आ ही जाती है, लेकिन ये भी सच है कि गुस्से को कंट्रोल करना भी उन्हें सीखना होगा। इससे चीजें काफी खराब हो सकती हैं और ये शराब पीने के बाद और ज्यादा खराब होती है। अगर वे लोग शराब के बाद कंट्रोल में नहीं रह सकते तो उन्हें रोक देना चाहिए।

सलीम खान को भी गुस्से की दिक्कत है और इस बात का खुलासा उन्होंने खुद एक इंटरव्यू में किया था। लाइव मिंट से खास बातचीत करते हुए सलीम खान ने कहा कि उनका गुस्सा बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। जब वह गुस्से में होते हैं तो उन्हें खुद भी डर लगता है। उन्होंने ये भी बताया कि उनका गुस्सा शॉर्ट टेंपर की तरह है और बीपी की समस्या जैसा भी होता है।

रियल बॉक्स

तवायफों की तहजीब और संघर्ष यानी 'हीरामंडी'

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

अभी तक तवायफों के कथानक पर जितनी भी फ़िल्में बनी, उनमें संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज %हीरामंडी% सबसे अलग है। %पाकीजा% और %उमराव जान% भी इसके सामने फीकी है। इस वेब सीरीज का सबसे सशक्त पक्ष है भव्य सेट, भारी-भरकम पोशाक और 1940 के आसपास का लाहौर। ये फिल्मों की तरह दो-ढाई घंटे में अपनी कहानी नहीं समेटती, बल्कि आठ हिस्सों में आठ घंटे तक दर्शकों को बांधकर रखती है। लाहौर की दो तवायफों के बीच आपसी वर्चस्व की ये कहानी अंत तक पहुंचते-पहुंचते देश की आजादी के लिए लड़ने वाले क्रांतिकारियों से जुड़ जाती है। फिल्म इंडस्ट्री का पहला %शो मैन% राज कपूर को माना जाता है, जिनके फिल्मांकन का कैनवस बहुत भव्य होता था। उनकी अधिकांश फिल्मों में ये दिखाई भी देता है कि जब किसी कथानक पर काम करते थे, तो उसमें डूब से जाते थे। उनके बाद यही नाम सुभाष घई को दिया गया। उनकी फिल्मों का कलेवर और कैनवस भी बहुत विशाल होता था। उनके बाद %शो मैन% का खिताब मिला संजय लीला भंसाली को जिन्होंने अपनी फिल्मों को एक नया स्वरूप दिया। हम दिल दे चुके सनम, देवदास, बाजीराव मस्तानी और %पद्मावत% जैसी उनकी फिल्मों में दर्शकों ने अलग ही भव्यता देखी। अब अपनी वही प्रतिभा वे अपनी पहली ओटीटी वेब सीरीज %हीरामंडी% में ले आए।

इस वेब सीरीज के रिलीज होने के साथ ही संजय लीला भंसाली अच्छी खासी चर्चा में हैं। खास बात यह कि उनको लेकर हो रही सारी चर्चा उनके काम के स्तर और सकारात्मक पक्ष को लेकर है। %हीरामंडी% जैसे तवायफों के विषय को उन्होंने जिस भव्यता से फिल्माया और बारीकियों का ध्यान रखा, वो उनके काम के प्रति समर्पण को दर्शाता है। संजय लीला भंसाली अपने काम से कोई समझौता नहीं करते, यही कारण है कि उन्हें राज कपूर और सुभाष घई की तरह या यूं कहें कि उनसे कहीं ज्यादा बड़ा %शो मैन% कहा जाता है। %हीरामंडी% एक पीरियड कथानक है, जो 1940 और उसके आसपास के दौर की कहानी कहता है। ख़ास बात यह भी है कि भारत के किसी शहर की नहीं, बल्कि ये बंटवारे से पहले पाकिस्तान के शहर लाहौर की कहानी है। %हीरामंडी% तवायफों का इलाका हुआ करता था, जिसे लेकर यह कहानी गढ़ी गई। वो दौर आजादी के आंदोलन का भी रहा, तो उसमें आजादी के लिए संघर्ष करने वाले क्रांतिकारियों को भी जोड़ा गया।

शुरुआत के कुछ एपिसोड देखकर नहीं लगता कि %हीरामंडी% की दो प्रतिद्वंदी तवायफों का किस्सा अंत तक आते-आते क्रांतिकारियों से जुड़ जाएगा और क्लाइमेक्स भी उसी पर केंद्रित होगा, पर हुआ यही! संजय लीला भंसाली का कहानी को फिल्माने का अपना अलग ही तरीका है, जो %हीरामंडी% में भी दिखाई दिया। %हीरामंडी% सिर्फ आठ घंटे के आठ एपिसोड तक फैली लंबी कहानी ही नहीं है, इसमें बहुत कुछ ऐसा है, जो अपने आप में अनोखा कहा जाएगा। सेट की भव्यता तवायफों की पोशाक बताती है, कि संजय लीला भंसाली ने उस समय के दौर को कितनी गंभीरता से समझा और उसका फिल्मांकन किया। लेकिन, इस भव्यता से वेब सीरीज के बजट का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। नवाबों और महाराजाओं के उस समय काल में तवायफों की समाज में क्या जगह थी और तहजीब को लेकर उन्हें किस तरह इज्जत बख्शी जाती थी, ये %हीरामंडी% देखकर ही पता चलता है। गौर करने वाली बात यह भी है कि फिल्म का काफी कुछ हिस्सा कम रोशनी में फिल्माया गया, जो थोड़ा खलता है। फिर भी ये निर्देशक की अपनी पकड़ है, कि वे दर्शकों को इसका अहसास नहीं होने देते।

संजय लीला भंसाली के लिए तवायफों की दुनिया शुरू से ही रुचि का विषय रहा है। पहले उन्होंने %देवदास% की चिर-परिचित कहानी को अपने अंदाज में फिल्माया। इसके बाद %गंगूबाई काठियावाड़ी% के जरिए तवायफों की जिंदगी के दुःख-दर्द के अंदर झांका। जबकि, %हीरामंडी% भी इन्हीं तवायफों की जिंदगी का सच बखान करती है, पर कुछ अलग अंदाज में। %हीरामंडी% की ये तवायफें अभाव में नहीं जीतीं और न किसी से डरती हैं। अंग्रेजी शासनकाल में भी उनकी दबंगता का अपना अलग ही अंदाज दिखाया गया। %हीरामंडी% में मनीषा कोइराला और उनसे जुड़ी तवायफों के जरिए इस बाजार की शानो-शौकत को दिखाया गया है। जिसमें मनीषा कोइराला और सोनाक्षी सिन्हा की आपसी प्रतिद्वंद्विता में बाजार पर कब्जे का संघर्ष है। इनके बीच शर्मीन सहगल को अड्डे की ऐसी लड़की बताया गया, जो तवायफों की दुनिया से निकलना चाहती है। उसे शायरी करना पसंद है, पर वो बाहर निकल नहीं पाती। वो जिसके सहारे इस दलदल से निकलने की कोशिश करती है, उसी की वजह से अंग्रेज सरकार के निशाने पर भी आ जाती है।

पहली बार परदे पर दिखाया गया कि आजादी के संघर्ष में तवायफों की भी अपनी भूमिका रही। ये वास्तव में हुआ भी या नहीं, यह तो पता नहीं ! पर, संजय लीला भंसाली ने अपनी इस वेब सीरीज में जिस तरह घटनाओं के मनकों को पिरोया है, वो देखने समय तो सच जैसा लगता है। क्योंकि, कैनवास की भव्यता और कहानी की कसावट दर्शक को कुछ और सोचने का मौका ही नहीं देती। इससे यह भी प्रतीत होता है कि यदि निर्देशक की कल्पनाशीलता विशाल हो और बजट कोई मुद्दा नहीं हो, तो सामान्य से कथानक को भी भव्यता दी जा सकती है। %गोलियों की रासलीला-रामलीला% के बाद संजय लीला भंसाली ने पीरियड और कॉस्ट्यूम ड्रामा को लेकर लगातार प्रयोग किए। इसके बाद बाजीराव मस्तानी, पद्मावत और %गंगूबाई काठियावाड़ी% में भी कॉस्ट्यूम ड्रामा ही था। पर, %हीरामंडी% में उसका भव्य रूप नजर आता है। यह इसलिए भव्य कहा जाएगा कि भंसाली ने यह सब डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए रचा। वे यथार्थ की दुनिया से लाहौर की तवायफों का स्वप्नलोक गढ़ने में सफल रहे।

संजय लीला भंसाली ने %हीरामंडी% के जरिए उस दौर के नवाबों की दुनिया का नजारा तो दिखाया ही साथ ही तवायफों की समाज में इज्जत और उनका दबदबा भी दिखाया। %हीरामंडी% तवायफों की वो दुनिया थी, जहां नवाबों की अय्याशी पलती थी और ये उनकी बेगमों को स्वीकार भी था। तवायफ़ों को लाहौर के इस बाजार को महफिल सजाने के लिए बुलाया जाता था। लेकिन, वैश्याओं की तरह नहीं, बल्कि नाचने-गाने वाली फ़नकारा की तरह। उन्हें मेहमान की तरह आमंत्रित किया जाता और बकायदा इज्जत बख्शी जाती। नवाबों के यहां इन्हीं तवायफों को तहजीब की पाठशाला कहा जाता था। एक दृश्य में कुदसिया बेगम (फरीदा जलाल) लंदन से पढ़कर लौटे अपने पोते ताजदार से कहती हैं %हिंदी जुबां और रिवायतें हम नहीं सिखा सकते, इसके लिए आपको %हीरामंडी% जाना होगा।% इस पर ताजदार कहता है कि वहां तो अय्याशी सिखाते हैं। इस पर दादी कहती हैं, व्हाट नानसेंस। वहां तो सारे नवाब जाते हैं। वहां अदब सिखाते हैं, नफासत सिखाते हैं ... और इश्क भी।

फिल्म कलाकारों में जिस तरह आमिर खान को मिस्टर परफेक्शनिस्ट कहा जाता है, तो निश्चित रूप से संजय लीला भंसाली भी उनसे कम नहीं हैं। सोनाक्षी सिन्हा, ऋचा चड्ढा, शर्मिन सेगल, संजीदा शेख और मनीषा कोइराला जैसे कलाकारों के पास %हीरामंडी% को लेकर कई अनुभव है जो उन्होंने वेब सीरीज रिलीज होने के बाद कई इंटरव्यू में बताए। संजय लीला भंसाली अपने काम को लेकर कितने गंभीर हैं, इस बारे में ऋचा चड्ढा ने एक इंटरव्यू में बताया कि आपने वो पोस्टर्स तो देखें होंगे, जिनमें मेरे सिर पर फूल हैं। वो फूल कई बार बदले गए। भंसाली जी हर थोड़ी देर बाद बोलते थे कि इन गुलाब को बदल दो! संजीदा शेख ने भी ऐसा ही एक अनुभव बताया कि सेट पर सिर्फ कलाकार ही एक्टिंग नहीं करते, सेट पर रखी कुर्सियां और पर्दों की भी अहम भूमिका होती है। पर्दों की क्रीज का भी ध्यान रखा जाता है। सोनाक्षी सिन्हा ने भी संजय लीला भंसाली की तारीफ की और कहा कि उनके जैसा विजन किसी के पास नहीं है। कभी डेकोरेटिव लैंप बुझ जाता था, कभी परदे हवा से नहीं हिलते या कभी ड्रेस की ड्रेप ठीक नहीं होती तो एक ही टेक कई बार शूट किया जाता। संजय लीला भंसाली की भांजी शर्मिन सेगल ने तो अनोखी बात बताई कि शूटिंग के वक्त भंसाली जी ने कैमरे में एक धागा देख लिया। दरअसल, एक क्लोजअप शॉट में ड्रेस से धागा निकलता दिख रहा था, तो उन्होंने सीन को कट किया और वो सीन फिर से शूट हुआ।

संजय लीला भंसाली ने आजादी से पहले के दौर की लाहौर की हीरामंडी की जो कहानी रची है, वो भले काल्पनिक हो, पर %हीरामंडी% इलाका सही है। यह पाकिस्तान के लाहौर शहर का रेडलाइट एरिया है। जिसमें एक वक्त पर हीरे, जेवरात बिका करते थे, इसलिए इसे हीरामंडी कहा जाने लगा। %हीरामंडी% की कहानी पूरे आठ भागों में अद्भुत भव्यता से फिल्माई गई ऐसी कहानी है, जिसकी किसी और वेब सीरीज या तवायफों वाली फिल्मी कहानी से तुलना नहीं की जा सकती। इस वेब सीरीज ने ऐसे विषयों पर बनी और बनने वाली सभी फिल्मों के सामने एक ऊंची लाइन जरूर खींच दी कि तवायफों की फिल्में सिर्फ तवायफों के अड्डों और मुजरों तक सीमित नहीं होतीं। और भी बहुत कुछ होता है,

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

मौसम से मेल नहीं खाता मूवी का मिजाज

अशोक जोशी

यह जरूरी नहीं कि मौसम फिल्मों की दृश्यावलियों के साथ मेल खाए। इन दिनों भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। पूरे देश का माहौल गर्म है। मैदानों में सूरज आग उगल रहा है। खेल मैदान पर आईपीएल का माहौल गरम हो और सारे देश में

चुनाव के दौरान फायरब्रांड नेता आग उगल रहे हो, बॉक्स ऑफिस को पाला मार गया है। देश के हजारों सिनेमाघरों में से एक भी सिनेमाघर ऐसा नहीं है, जिसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन थर्मामीटर में दर्ज देश के तापमान से मेल खाता है।

मौसम और मूवी का संबंध भी अजीब होता है। सत्ता पक्ष और विपक्ष की तरह सिनेमा और मौसम का मिजाज भी कभी मेल नहीं खाता। जब थिएटर के बाहर सर्द हवा के झोंके चल रहे होते हैं, सिनेमा हाल के अन्दर झरने के नीचे नहाती वेदरफ्फ नायिका गर्मी बिखेर रही होती है। जब मैदानों में सूरज अपनी तपिश बिखेर रहा होता है और सूरज पूरे शबाब पर होता है। एयर कंडीशनर सिनेमा हाल के अन्दर स्विटजरलैंड में नाचते-गाते नायक और नायिका माहौल को ठंडक प्रदान कर रहे होते है।

इस बारे में बॉक्स ऑफिस का गणित कुछ और ही कहता है। जरूरी नहीं कि यह भी मौसम या फिल्मों की दृश्यावलियों के साथ मेल खाए। इन दिनों भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। पूरे देश का माहौल गर्म है। मैदानों में सूरज आग उगल रहा है। खेल मैदान पर आईपीएल का माहौल गरम हो और सारे देश में चुनाव के दौरान फायरब्रांड नेता आग उगल रहे हो, बॉक्स ऑफिस को पाला मार गया है। देश के हजारों सिनेमाघरों में से एक भी सिनेमाघर ऐसा नहीं है, जिसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन थर्मामीटर में दर्ज देश के तापमान से मेल खाता हो।

फिल्म इंडस्ट्री और बॉक्स ऑफिस के लिए गरमी के महीने बहुत खराब रहे। अप्रैल में ईद के मौके पर रिलीज हुई दो बड़ी फिल्में औंधे मुंह गिरी। वहीं, मई में किसी बड़े सुपरस्टार की फिल्म रिलीज न होने से बॉक्स आफिस पर सन्नाटा पसरा है। 2024 के पांच महीने गुजरने को है, लेकिन, बॉलीवुड को अभी भी इस साल की अपनी पहली कमाऊ फिल्म की प्रतीक्षा है। फिल्म इंडस्ट्री के लिए अप्रैल का महीना इस साल का सबसे बेकार महीना साबित हुआ। ईद के अवसर पर अक्षय कुमार और अजय देवगन

जैसे बड़ी स्टार्स की फिल्म %बड़े मियां छोटे मियां% और %मैदान% बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिरी। इससे तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस साल के बचे हुए महीनों में भी बॉलीवुड के लिए बॉक्स ऑफिस में आगे की राह इसी तरह सूखी और अनउर्वरक ही रहने वाली है।

इधर सत्तारूढ पार्टी अबकी बार चार सौ पार का नारा लगा रही है। उधर, विपक्षी दल भी लोकसभा में बहार लाने का दावा कर रहे हैं।

लेकिन, अफसोस, सिनेमा में सफलता और सौ करोड़ पार के दावे करने वालों के मुंह पर ताले लग गए हैं। बॉलीवुड के मौसम का यह हाल है कि देश का मौसम गर्म और उमस से भरा है लेकिन, बॉक्स ऑफिस बर्फ की तरह ठंडा है। अप्रैल 2024 में रिलीज हुई फिल्म डिजास्टर रही है। आने वाली फिल्मों से उम्मीद है कि वह फिल्म बिजनेस को सक्रिय और पुनर्जीवित करेंगी। मई में राजकुमार राव की फिल्म श्रीकांत 10 मई को प्रदर्शित हुई। 24 मई को मनोज बाजपेई की %भैया जी% भी रिलीज हुई, पर इसके भी शुरुआती आंकड़े संतोषजनक नहीं कहे जा सकते।

अच्छे कथानक और राजकुमार राव के बेहतरीन अभिनय के बावजूद सिनेमा हाल वहां चल रहे एयर कंडीशनर से भी ज्यादा ठन्डे रहे। कोई दर्शक फिल्म न सही चिलचिलाती धूप में ढाई घंटे एसी की ठंडक लेने ने नहीं आया। %श्रीकांत% पर श्री की कृपा नहीं हुई। राजकुमार राव और जाह्नवी कपूर की %मिस्टर एंड मिसेज माही% 31 मई रिलीज हो रही है। श्रीकांत की तरह ही यह भी एक मिड बजट फिल्म है। जब श्रीकांत अपनी लागत निकालने में असफल रही तो क्या %मिस्टर एंड मिसेज माही% भी आईपीएल की सीएसके की तरह ट्रॉफी लिए बिना ही सिनेमाघर से बेरंग लौटेगी। जून के महीने में मानसून के आने से लोगों को गर्मी से राहत मिलती है। फिल्म वालों को भी उम्मीद है कि गर्मी में ठंडा रहा बॉक्स ऑफिस में भी मौसम बदलेगा और देश में शुरू हुई बरसात के साथ ही बॉक्स ऑफिस पर भी नोटों की बरसात होना आरंभ हो जाएगी।

सिनेमा से जुड़े लोग भी बदलते मौसम को लेकर आशान्वित है। उनकी दलील है कि इस समय देश में लोकसभा चुनाव का माहौल है। इसके बाद दर्शक सिनेमा की तरफ वापसी कर सकते है। जून में कार्तिक आर्यन की फिल्म %चंदू चैम्पियन% रिलीज हो रही है। इसके अलावा प्रभास की बड़ी बजट फिल्म %कल्कि% के प्रदर्शन की तैयारियां हो रही है। %चंदू चैंपियन% का निर्देशन कबीर खान ने किया जो बॉक्स ऑफिस का जादू जानते हैं। वहीं %कल्कि% में प्रभास के अलावा दीपिका पादुकोण, अमिताभ बच्चन, कमल हासन जैसी बड़ी स्टार कास्ट है। इस फिल्म से भी यही उम्मीद लगाई जा रही है कि यह बॉक्स आफिस का सूखा समाप्त करने में मदद करेगी। दोनों फिल्मों का कंटेंट अच्छा हुआ तो फिल्म अच्छी कमाई कर सकती है।

बॉलीवुड का इसके आगे का सफर भी खुशनुमा माना जा रहा है। साल के उत्तरार्ध में कई मिड से बड़ी बजट फिल्में परदे का मुह देखने जा रही है। इन फिल्मों में ज्यादातर फिल्में ऐसी है, जो किसी सफल फिल्म का सिक्वेल है।

पहली पारी की सफलता के बाद अनिश्चतता के मैदान में सफलता का सपना दिखाने वाली इन फिल्मों में स्त्री-2, भूल भुलैया-3, रेड-2, सिंघम अगेन के बारे में भी दावे किए जा रहे हैं। इस समय चुनावी मंचों से पक्ष और विपक्ष दावे कर रहे हैं कि अबकी बार 300 करोड़ पार। विक्की कौशल की फिल्म %छावा% भी ऐसा ही कुछ सपना दिखा रही है। लेकिन भारतीय मतदाताओं की तरह भारतीय दर्शकों के रुख का कोई एक्जिट पोल सटीक बैठने का दावा नहीं किया जा सकता। कल की बातें तो कल देखी जाएगी, लेकिन हिन्दी फिल्मों के मौसम का ताजा हाल तो यही है कि भरी गर्मी के बीच बॉक्स ऑफिस आपके और हमारे घर की तरह ठंडा है और हमारी तरह दर्शक भी बाहर जाकर लू में झुलसने का जोखिम उठाना नहीं चाहते।

टेम्पो से बन रहा... चुनावी-टेम्पो!

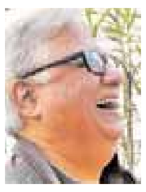

प्रकाश पुरोहित

जब शहर में चलते थे, तब भी टेम्पो कहते थे और अब अंबानी-अदाणी के यहां से ब्लैक-मनी ढोकर कांग्रेस का खाली खजाना भर रहे हैं तो भी टेम्पो ही कहा जा रहा है। टेम्पो ने इतनी तरक्की कर ली, लेकिन नाम नहीं बदला। यह अच्छा ही हुआ, वरना पता ही नहीं चलता कि काला धन किस ट्रांसपोर्ट के जरिए ट्रांसफर किया जा रहा है। अपना ये टेम्पो, फटेहाल नागरिक ढोने से शुरुआत कर ब्लैक मनी तक पहुंच गया और हमें खबर भी नहीं हुई। भला हो आम चुनाव और दो माह बाद निदेशक-मंडल के काबिल होने जा रहे प्रधानमंत्री का, कि इनकी वजह से यह रहस्य हमारे सामने खुला कि टेम्पो अब भी कायम है। सिर्फ चल ही नहीं रहा है, खामोश रह कर बड़ी-बड़ी सप्लाय भी कर रहा है। कभी टेम्पो भर कर गुंडे पहुंचाए जाते थे और अब, देखिए काला धन पहुंचाने का विश्वसनीय साधन टेम्पो हो गया है।

सूअर के मुंह जैसा अगला हिस्सा होने से प्यार से टेम्पो को कुछ इलाकों में 'भट-सूअर' भी कहा जाता था। तब विकसित हो रहे नगर की पहचान इसी से होती थी कि टेम्पो चल रहे हैं या नहीं। जो टेम्पो कबाड़ होने लगते थे, उन्हें गांव में चलाने का लायसेंस मिल जाता था कि कम आबादी और कम हो भी गई तो शहर में हल्ला नहीं होगा। गांव वाले यानी ग्रामीण जनता इसे 'टेम्पू' कहना पसंद करती थी, क्योंकि पेट-नेम की वहां परंपरा रही है। टेम्पो में हॉर्न की गुंजाइश इसलिए खत्म हो गई थी कि जब स्टार्ट होता था तो दूर से उठते काले धुंए और बम के धमाके जैसी इंजन की आवाज से उतने गांव में खबर हो जाती थी, जितने गांव में गब्बर का आतंक था और बच्चे भी उसका ह्यनाम सुन कर सो जाते थे।

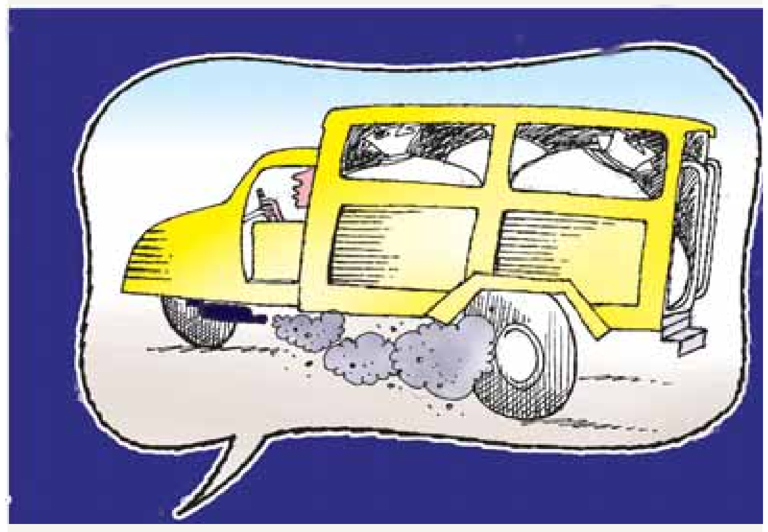

इसमें स्टार्टर नहीं होता था, जैसे भैंस को रस्सी से खींच कर ले जाते हैं ना, ठीक वैसे ही टेम्पो को एक व्यक्ति, रस्सी खींच कर बाहर से स्टार्ट करता और अंदर बैठा एक्सलेटर दबाता था, इस बहाने दो लोगों को रोजगार मिलता था और देश की बेरोजगारी कम रहती थी। टेम्पो के गायब होने या काला धन ट्रांसफर करने में लगे होने की वजह से भी देश की बेरोजगारी बढ़ रही है। प्रधानमंत्री की नजर इन पर पड़ी है तो संभव है टेम्पो फिर बनने लगें और परीक्षाओं के पेपर आउट होते रहने के बावजूद बेरोजगारी कम हो जाए।

तब जगह-जगह टेम्पो स्टैंड बनाए जाते थे कि यदि शहर के लोग आंखों देखा स्टंट यानी मार-कुटाई के गवाह बनना चाहें तो यहां सवारी को लेकर ड्राइवरों और एजेंटों के बीच ऐसे दृश्य हाजिर होते ही रहते थे। पुलिस भी आज की तरह नहीं कि रेलवे लाइन या पुल के नीचे से बैंक लूटने के योजनाकारों को गिरफ्तार कर लाती थी। सीधे टेम्पो स्टैंड गए, दो चार असामाजिक तत्व तो हाथ लग ही जाते थे। उन दिनों टेम्पो स्टैंड को पुलिस ट्रेनिंग स्कूल या कॉलेज की तरह उपयोग में लाया जाता था, यानी तब भी अपराध का भरोसेमंद सूत्रधार टेम्पो ही था और आज तो देखिए, कितनी तरक्की कर ली है। ऐसा लगता है, जैसे कोई फकीर झोला लेकर आया और पीएम बन गया।

सोचिए... आखिरी बार टेम्पो कब सुना था, भला हो भाजपा के वरिष्ठ नेता और दो माह बाद अपना पद किसी और के हवाले करने वाले प्रधानमंत्री का, कि टेम्पो सुनने को मिल गया। वाकई सरकार की खुफिया एजेंसी कितनी अलर्ट है कि काले धन का भी पता रखती है, किसने भेजा, कहां भेजा और काहे से भेजा, पूरी रिपोर्ट गृह मंत्रालय को ही नहीं, पीएम को भी दे रही है। वो तो कहिए पीएमजी पौन सदी पुराने चावल हैं तो पता है, टेम्पो किसे कहते हैं, वरना राहुल गांधी तो पूछते ही रह जाते कि ये टेम्पो क्या होता है।

ओरिजनल नई-दुनिया के निहायत ओरिजनल और धाकड़ मैनेजिंग एडिटर नरेंद्र तिवारी किसी के इंतजार में किबे कंपाउंड पर मदनलाल गर्ग की टायर दुकान में बैठे थे। शेषन-काल चल रहा था और आम चुनाव थे। दुकान पर बैठे एवजी को लगा इतने गुणी व्यक्ति हैं, सामने तो कुछ कहा जाए। यह कोई चालीस साल पहले का वाकया है। कहने लगे 'इस बार चुनाव का माहौल नहीं लग रहा है।' तिवारीजी ने कहा 'हां, थोड़ी सख्ती है और फिर टेम्पो बनने में भी तो समय लगता है ना।' एवजी के लिए यह गुगली थी। बोल पड़ा ' क्या इस बार टेम्पो से ही प्रचार होगा...? अलग से बनाए जा रहे हैं?' तिवारीजी ने घूर कर देखा और चुप हो गए। गनीमत रही कि तभी गर्ग साहब आ गए और बात आई-गई हो गई। तब मुझे भी यह बात थोड़ी अजीब लगी थी कि चुनाव में टेम्पो का क्या काम। तब संपादक राजेंद्र माथुर (रज्जू बाबू) ने समझाया था 'चुनाव के टेम्पो और राजवाड़ा से सवारी ढोने वाले टेम्पो में कोई रिश्ता नहीं है।' खुद की अज्ञानता पर हंसी भी आई थी, उस समय।

आज ये 'टेम्पो भर बातें' इसलिए याद आ रही हैं कि बरसों बाद किसी अवतारी ने टेम्पो को उसी तरह फिर से चलन में ला दिया है, जैसे पत्थर की अहल्या को पैर लगा कर इतिहास में जीवित कर दिया था। उस समय यदि किसी ने टेम्पो से ब्लैक-मनी ढोने का रहस्य खोल दिया होता तो अपनी अज्ञानता पर अफसोस तो नहीं होता। इसी को कहते हैं भविष्य-दृष्टा, तब जो बात लागू नहीं हो रही थी, आज सौ फीसद फिट बैठ रही है, अर्थात चुनावी टेम्पो तभी बन सकता है, जब टेम्पो भर कर काला धन इधर से उधर होता है। 'यह क्रिया से संज्ञा कैसे हो गया।' चुनाव में टेम्पो नहीं बन रहा है, यह तो सुन रखा था, टेम्पो से कंसाइनमेंट भी डिलीवर होता है, यह पता नहीं था।

भला हो मौजूदा प्रधानमंत्री का कि उन्होंने चुनावी टेम्पो का टेम्पो से रिश्ता जगजाहिर कर दिया। अब कह सकते हैं कि चुनाव में काला धन जिस वाहन से ढोया जाता है, उसे टेम्पो कहते हैं। फिर भी यह सवाल तो बाकी है कि शहरों से गायब होने के बाद टेम्पो इस पवित्र कार्य में लगाए गए हैं या सिर्फ यही करने में लगे हैं, इसलिए सवारी ढोना बंद कर दिया? रज्जू बाबू आज होते तो उनसे जरूर पूछ लेता!

गमलों में उगे जिंदगी के बोनसाई

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

चौंक गये ना। दरअसल हम शहरी लोगो ने एक बौने पौधे को 'बोनसाई' नाम दे रखा है। उस पर दुःख की बात यह है वो पौधा प्राकृतिक रूप से बौना नहीं होता। जापानी भाषा में बोनसाई का अर्थ होता है 'बौना पौधा'। बोनसाई शब्द मूल चीनी शब्द 'पेन्जाई' का जापानी उच्चारण है, बोन उस पात्र को कहते है जिसमें ये पौधे लगाये जाते है जो ट्रे के समान होते है।

अब आती हूँ मुद्दे की बात पर, 'बोन' है हमारी 'जिंदगी' बोनसाई हैं हम सब। जी हां अपने आप को स्वतंत्र, लंबा, पौधा जो पेड़ में तब्दील होता है मत मानिये। हमने संस्कारों, विचारों, रूढ़िवादी परंपराओं के तले अपने घरों में बोनसाई तैयार किये है। सबसे पहले मुख्य तने को झुकाया जाता है और उसकी शाखाओं को आसपास बढ़ने दिया जाता है। हमारे युवा होते बच्चे अब बुजुर्गो को दबा देते हैं। उनके अनुभव साझा नहीं करते। बचपन से ही मॉ बाप को लगता है हमारा बच्चा बिगड़ ना जाये, तो उसे समाज में भेजने से पहले उसकी स्वतंत्र सोच की जड़ों को काट दिया जाता है।

एक 'तिरछा बोनसाई' होता है जो 45 डिग्री कोण से बालू मिट्टी से जगह बना कर बढ़ता है। ये वो बागी बच्चे हैं जो अपनी जगह खुद बनाना चाहते है। एक होता है 'दो तने वाला बोनसाई' ये मातापिता है दोनों की ऊँचाई अलग अलग होती है। ज़ाहिर सी बात है ऊँचा तना पुरूष का होता है। कुछ 'सीधे वृक्ष' होते है जो पतले जरूर होते है इनकी शाखायें 90 के कोण बनाकर बढ़ती है। पतला तना है आपके हिटलर बुजुर्ग और 90 के कोण से भागती शाखाये उनकी तानाशाही के शिकार बच्चे युवा।

अच्छा जब बचपन से ही जड़े निकाल कर बार बार काटी जायेंगी तो व्यक्तित्व बढ़ना बंद कर ही देगा। स्त्री का बोनसाई 'केस्केड' है जिसमें गमले के पैंदे तक झुकाया जाता है, सोचने, समझने, आगे बढ़ने की क्षमता माली के हाथ में रहती है। ऐसा बोनसाई बचपन से ही जड़ें कटवा चुका होता है। बस उसे एक अच्छी ''बोन'' (ट्रे) दी

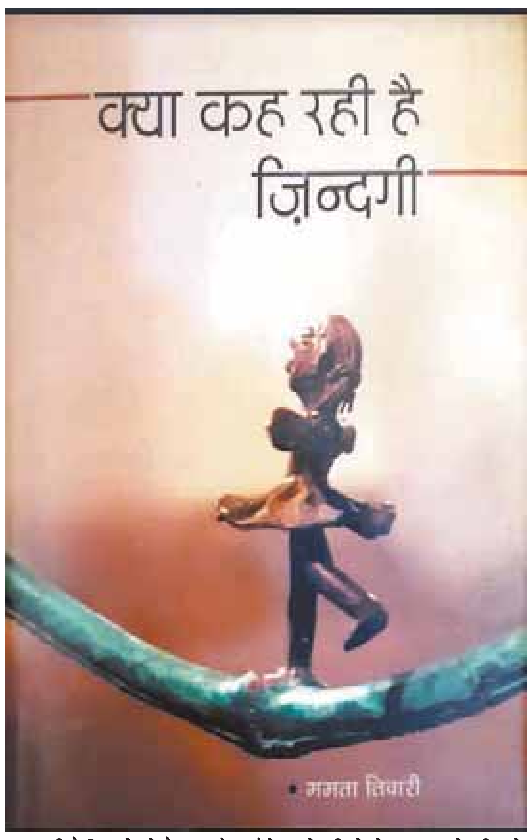

जाती है जिसमें वो फैल सके, ऊँचे उठने की, ट्रे से बाहर जाने की उसे आज्ञा नहीं है। अन्यथा उसकी सुंदरता जो नष्ट हो जायेगी।

कुछ जीवन ऐसे होते है जो पनप नहीं पाते। इस श्रेणी में, बच्चे, बूढ़े, जवान स्त्री पुरूष सब आते हैं। वो होते है 'विण्ड स्वेप्ट' बोनसाई जिसमें मुख्य तने (घर का मुखिया) को एक दिशा में बढ़ने दिया जाता है ताकि ऐसा प्रतीत हो कि शाखाएं वायु के झोंके से प्रभावित हो गई है ये बेतरतीबी कई बार हम ही अपने बच्चों के जीवन में लाते है। मसलन 'तुम सदा ऐसे ही अस्त व्यस्त रहोगे' तुम से कुछ ना हो पायेगा। और वो इसी अस्त व्यस्त रूप में तने के साथ चिपके रहते है। एक परंपरा है जो तमाम संघर्षो, ईर्ष्या, द्वेष जलन के साथ 'वृक्ष समूह बोनसाई' जिसमें अनेक वृक्ष लगाये जाते है जैसे कि सब संयुक्त परिवार में रहती है। कुछ घरों की नींव बहुत संघर्ष मजबूती के साथ रखीं जाती है पर फिर भी पनपती है। ये है हमारा 'चट्टानी बोनसाई' जिसमें पत्थर और चट्टान के टुकड़े रख दिये जाते है और उन पर वृक्ष की जड़ें फैल जाती है। ये होते है परिवार के मजबूत बुजुर्ग जो अपने बच्चों, जवानों को ऊँचा उठने में मजबूती प्रदान करते है। एक परिवार या व्यक्ति ऐसा भी है जो अपनी शर्तो पे जीवन जी रहा है खुश स्वतंत्र 'लहराता बोनसाई' इसकी दो शाखाएँ लहराती हुई गमले की सतह से निकली होती है। मैंने इसे 'मन मर्ज़िया' नाम दिया है।

अरे 'इकाडा बोनसाई' भूलगई जिसमें मुख्य शाखा (मुखिया) का पूरा मिट्टी तक झुकाकर दो तीन स्थानों पर शाखाओं (जवानों) को विकसित होने दिया जाता है। अब आया मेरा मनपसंद बोनसाई 'खुली जड़ वाला बोनसाई' ये 90 या 45 डिग्री के कोण से बढ़ता है अर्थात् घर का मुखिया सीधे प्रगति पर है और इसकी जड़ें अंदर नहीं होती बल्कि जड़ों को मिट्टी के अंदर ना डाल कर ऊपर की तरफ खुला छोड़ चारों तरफ बालू फैला देते हैं। ये होनी चाहिये हमारे बुजुर्गो की जिंदगी, जड़ों सहित, आसमान चूमते, इस उम्र में भी सोच की आज़ादी। कई बार संयुक्त परिवार में कई बड़े होते है, जो अक्सर बाद में बच्चों, बीबी के कहने में आकर इस प्रथा को तोड़ना चाहते है ऐसे बोनसाई 'सिनुअस' कहलाते है जिसमें कई तने विकसित होते है।

आप भी हर तने को अपने तरीके से परिवार में पनपने दे ज़मीन तो सबकी एक है। देखिये अब ये हम पर निर्भर है, कि हम अपने जीवन में कांटे, फूल, फल (जी हां छोटे छोटे फल भी लगते है इन बौने पौधो में) क्या उगाये। आप लाख कोशिश करे बड़ा पीपल, बरगद घर में अब नहीं लगा सकते उनकी जड़े फैल कर घर की नींव कमज़ोर कर देती है। बोनसाई कहता है दिल में जगह बड़ी रखो पर एक छोटे गमले में स्वतंत्र जड़ों के साथ ढेर सारी शाखाओं को लिये खूब फलों फूलों और पूछो सुबह सवेरे एक दूजे से और क्या कह रही है जिंदगी।

.तो सुकून बना रहेगा

फोटो और विवरणः बंसीलाल परमार

मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में पारा सारे रिकार्ड तोड़ रहा है। ऐसे में लोगों को याद आ रहे हैं वे पेड़ जिनकी घनी छांह राहत दिया करती थी लेकिन उन्हें तो विकास के लिए काट दिया गया। कष्ट के इन्हीं दिनों में कुछ प्रयास सुकून भी देते हैं। जैसे यह। यह तस्वीर असलावदा रेलवे स्टेशन की है। नागदा से उज्जैन जंक्शन के बीच यह एक छोटा सा स्टेशन है। असलावदा के प्लेटफार्म नंबर दो पर यात्रियों को छाया देने के लिए एक शेड बनाया गया है। ऐसे शेड हर जगह बनते हैं लेकिन यहां इस शेड के लिए पेड़ को काटा नहीं गया बल्कि सघन नीम के पेड़ को वैसा ही बना रहने दिया गया। यह छोटा सा काम बहुत बड़ा है। उनके प्रति श्रद्धा उपजती है जिन्होंने पेड़ को काटा नहीं। बहुत ही सरल था इसे शहीद करना तथा उसके बाद ईंधन में तब्दील कर देना। इस सप्ताह जब तापमान 45 डिग्री पहुंच गया है, यह पेड़ एक अभिभावक की तरह मनुष्यों की भीषण ताप से रक्षा कर रहा है। पेड़ बचाएंगे तो हम खुद बचेंगे। आभार असलावदा रेल्वे स्टाफ।

//भाषान्तर//

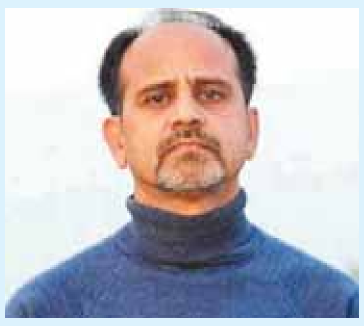

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज अमेरिकन कवयित्री हेज़ल हाल (1886-1926) की एक कविता का छायानुवाद।

चीजें जो बढ़ती हैं

मुझे वे चीजें पसंद हैं
जिनकी जड़ें धरती को जानती पहचानती हैं,
पेड़ों के भूरे फुर्तीले पैर
अपने पैदाइशी घरों में भटकते हैं
जब तक कि वे सयाने होकर
हवा में शाखाओं के साथ निर्माण करना नहीं सीख जाते;
आइवी की लताएं जो दोमट मिट्टी को जानती हैं
जालियों और जंग लगीं सीढ़ियों को पहचानती हैं,
धूसर मकानों में आवरगी पसंद है
और फूल आग की छुपी हुई चमक से
लपटों की तरह
बगीचे की खदबदाती मिट्टी से
अपने सिरों को बाहर निकाल रहे हैं।
और एक मैं हूँ, जिसे मनाही है
धरती की अनुभूति जानने की,
जो एक समय हृदय से गीत बनकर झरती थी!
धरती से बिना सिखाये मैं किस तरह जगा सकती हूँ आकाश
के जगमग में रूचि?

मौका नहीं, सजा देने का चुनाव!

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

गुलजार की त्रिवेणी है 'पर्चियां बांट रही हैं गलियों में, अपने क़ातिल का इंतेख़ाब करो, वक्त सख्त है चुनाव का।' चौदह साल से इंग्लैंड में टोरी पार्टी की सरकार रही है और आने वाले चुनाव में सरकार तो बदलेगी ही, लेकिन उस सरकार को चलाने वाली पार्टी भी बदलेगी। यह चुनाव सिर्फ पांच बरस का लेखा-जोखा देख कर वोट देने वाला नहीं हैं, चौदह बरस का हिसाब-किताब किया जाएगा।

भले ही झूट बोल कर और ढेरों गलतियां छिपा कर 2019 में बोरिस जॉनसन चुनाव जीत गए थे, लेकिन भूल चुके थे कि किन वजहों से उन्हें लंदन का मेयर बनाया गया था। प्रधानमंत्री सुनक ने कहा कि हर वोट के लिए लड़ेंगे और यह भी कि यह देश के लिए अपना भविष्य चुनने का समय है, लेकिन हर चुनाव भविष्य के लिए नहीं होता है, कई बार चुनाव जाती हुई सरकार से छुटकारा पाने के लिए भी होता है।

चौदह बरस में 2015-2016 का ही दौर ऐसा था, जब प्रधानमंत्री कैमरून थे, लेकिन उनके मुगालते की वजह से ब्रेक्सिट वोट की बात शुरू हो गई और उसके बाद से देश दलदल में फंसता ही जा रहा है। जब से गॉर्डन ब्राउन (2010) ने कुर्सी छोड़ी है, लेबर पार्टी लगभग हाशिए पर ही है। चुनाव में टोरी और लिबरल डेमोक्रेट की साझा सरकार बनी।

बोरिस जॉनसन

उसके बाद 2015 में पूरी तरह से टोरी के हाथ में सत्ता आ गई, 2019 के समय लेबर ने ब्रेक्सिट के खिलाफ या हक में कोई बात नहीं कही और उसी का नतीजा रहा कि बोरिस जॉनसन को बड़ी जीत मिल गई। इस चुनाव में टोरी के चौदह साल का हिसाब-किताब देखा जाएगा। आम जनता की मुश्किलें बढ़ी हैं। हालत बदतर ही हुई है। आय में कमी हुई है। 'मेड इन ब्रिटेन' का नारा हकीकत में तेजी से नहीं बदल रहा, पचास लाख से ज्यादा लोग गरीबी में हैं, अनगिनत फूड बैंक (ऐसी दान संस्थाएं जहां रोजमर्रा की चीज मुफ्त में बांटी जाती हैं) के सहारे हैं। इस के लिए महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध को जिम्मेदार बताया जा रहा है, लेकिन सही मायनों में सरकार खुद और टोरी प्राइम मिनिस्टर्स के फैसलों की फसल ही काट रही है।

यूके में इंतजार है फिजिशियन से अपॉइंटमेंट के लिए। इंतजार हो या कोर्ट में सुनवाई की तारीख, हर तरफ सिस्टम की कमी है। रवांडा की पालिसी हो या ब्रेक्सिट के बाद के दौर में सीवर के पानी को यूं ही नदियों और समंदर में छोड़ देने की बात हो, मौजूदा सिस्टम टूटा और बिखरा है। सही मायनों में इस पार्टी और उसके नेताओं ने लापरवाही की है। महामारी के वक्त इस देश के लोगों ने दिखाया कि समाज के लिए कुछ करने की इच्छा कितनी ज्यादा है, लेकिन जॉनसन ने उसकी भी इज्जत नहीं रखी बल्कि मजाक ही बना दिया। लगता है चार जुलाई का चुनाव किस पार्टी को मौका देने का नहीं, बल्कि किसे सजा देना है, उसका फैसला करेगा।